राष्ट्रीय

# छात्रशक्ति

वर्ष-46 ■ अंक-08 ■ दिसंबर 2024 ■ ₹10 ■ पृष्ठ-36

## भाव स्वदेशी-समरसता हो विकसित भारत का आधार

# 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

# राष्ट्रीय छात्रशक्ति

**शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका**

वर्ष-46, अंक-08
दिसंबर 2024

**संपादक**
आशुतोष भटनागर
**संपादक-मण्डल**
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

**संपादकीय पत्राचार**
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।


## अबकी बार

**05** **गुरु गोरखनाथ की धरती पर लघुभारत**

गुरु गोरखनाथ की पावन भूमि पर स्थित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रांगण में अस्थायी रूप से बसाए गए अहिल्याबाई होल्कर नगर का मूर्त रूप जैसे ...

| | |
|---|---|
| संपादकीय | 04 |
| पारित हुए पांच प्रस्ताव | 11 |
| राष्ट्रीय एकात्मता का दर्शन कराती है अभाविप की प्रदर्शनी : चंपत राय | 12 |
| अभाविप की सदस्यता हुई 55 लाख पार, टूटे सारे कीर्तिमान | 14 |
| सनातन संस्कृति में जाति-भेद जैसी कुरीतियों का कोई स्थान नहीं : गोविंद नायक | 16 |
| दीपेश नायर को मिला प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार | 18 |
| विज्ञान और तकनीक के सापेक्ष स्वयं को तैयार करें युवा : योगी आदित्यनाथ | 19 |
| राष्ट्रीय पदाधिकारी 2024-2025 | 21 |
| "श्रवणबाधित बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समर्पित है जीवन" | 22 |
| डूसू चुनाव में अभाविप को मिले सर्वाधिक मत | 23 |
| परिवर्तन का सूर्योदय : युवा पदचाप | 24 |
| संगठन शिल्पी : प्रा.यशवंत राव केलकर | 26 |
| आहिल्याबाई होल्कर की स्मृति में शक्ति संचयन छात्रा सम्मेलन | 29 |
| Universal Declaration of Human Rights and Constitution of India | 30 |
| Digital Arrest: The Emerging Face of Cybercrime and Preventive Measures | 32 |
| देश में बना पहला संविधान संग्रहालय | 34 |



**वैधानिक सूचना :** राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

# संपादकीय

वर्ष 2024 देश में अनेक विपर्ययों का वर्ष रहा है। परस्पर विरोधी गतिविधियां, आगे बढ़ने के संकल्प और पीछे खींचती चुनौतियां एक साथ सक्रिय दिखती हैं। गत वर्षों में एक ओर शैक्षिक परिसरों में भारत विरोधी गतिविधियों में तेजी आई, समाज को अनेक वास्तविक और काल्पनिक मुद्दों पर विभाजित करने के कुत्सित प्रयास हुए, सामाजिक आर्थिक मोर्चे पर समाज जिन पड़ावों और जिन आन्तरिक संघर्षों को पीछे छोड़ नित नए प्रतिमान गढ़ रहा है, उन्हीं विभाजनकारी मुद्दों को सामने लाने और विभेदों को हवा देने के प्रयास हो रहे हैं।

वहीं, दूसरी ओर देश के छात्र-युवा अभाविप के साथ कदम से कदम और कंधे से कंधा मिला कर अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों से देश की झोली भर रहे हैं, अपने सामाजिक सरोकारों को रचनात्मक दिशा देकर विभिन्न वर्गों और समूहों के जीवन को सरल बनाने में योगदान कर रहे हैं। श्रवण बाधितों के लिए प्रशिक्षण और शैक्षणिक केंद्र (टीच) के सह-संस्थापक दीपेश नायर का उदाहरण हमारे सामने है, जिन्होंने श्रवण दिव्यांगजनों में कौशल विकास एवं शिक्षा के माध्यम से उनके जीवन में उद्देश्य और उत्साह उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अधिवेशन में दीपेश को प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो उन जैसे अन्य अनेक युवाओं को सामाजिक क्षेत्र में और अधिक बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वबोध और नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजगता जैसे परिवर्तन के पांच सूत्रों को लेकर अभाविप ने परिसरों और परिवारों तक जाने का निश्चय किया है। छात्र-युवाओं के जीवन में इन मूल्यों के ढालने के बाद ही आनंदमयी सार्थक विद्यार्थी जीवन की कल्पना की जा सकती है, जो परिसर चलो अभियान का मूलमंत्र है।

**सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वबोध और नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजगता जैसे परिवर्तन के पांच सूत्रों को लेकर अभाविप ने परिसरों और परिवारों तक जाने का निश्चय किया है।**

भारत में आध्यात्मिक, दार्शनिक चेतना के शिखरपुरुष गुरु गोरखनाथ जी की साधनाभूमि पर आयोजित 70वां राष्ट्रीय अधिवेशन दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय में अस्थायी रूप से बनाए गए पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर नगर में सम्पन्न हुआ। सामाजिक समरसता के अग्रदूत गोरक्षपीठ के महन्त अवेद्यनाथ की स्मृति में प्रदर्शनी पंडाल तथा प्रसिद्ध बलिदानी क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल की स्मृति में सभागार का निर्माण किया गया था। स्मरण रहे कि भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में गोरखपुर का महत्वपूर्ण स्थान है। विशेष रूप से यह क्रांतिकारी गतिविधियों का गढ़ रहा। नगर को यह गौरव भी प्राप्त है कि यहां के एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल संभवतः एकमात्र व्यक्ति हैं, जिन्हें आन्दोलनकारी गतिविधियों के चलते दो बार अंडमान में कालेपानी का दंड भुगतना पड़ा और वहां से वह अपने आत्मविश्वास के बल पर जीवित लौट सके।

अभाविप आज 55 लाख सदस्यता के साथ विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन तो है ही, अन्य छात्र संगठन इस मापदण्ड पर अभाविप से कोसों पीछे हैं। इसका श्रेय संगठन की विशिष्ट कार्यपद्धति, जिसके कारण यह प्रवाही सदस्यों वाला स्थायी संगठन निरंतर जीवंत और वर्धमान रहता है, को जाता है। इस कार्यपद्धति और संगठनशास्त्र के शिल्पकार स्व. प्रा. यशवंतराव केलकर का जन्म शताब्दी वर्ष आगामी 25 अप्रैल को प्रारंभ होगा। विश्वास है कि यह अवसर संगठन को और अधिक विस्तारित तथा अधिक सुगठित बनाने के ध्येय में मील-पत्थर सिद्ध होगा।

राष्ट्रीय युवा दिवस एवं मकर संक्राति की हार्दिक शुभकामना सहित

आपका
संपादक

# गुरु गोरखनाथ की धरती पर लघुभारत

## अभाविप का 70वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

■ अजीत कुमार सिंह

गुरु गोरखनाथ की पावन भूमि पर स्थित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रांगण में अस्थायी रूप से बसाए गए अहिल्याबाई होल्कर नगर का मूर्त रूप जैसे सामने आया तो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए देश की विभिन्न हिस्सों से आए कार्यकर्ताओं में उत्साह, उमंग, हर्ष, ऊर्जा, उल्लास एवं देशभक्ति का ज्वार फूट पड़ा। देश के 45 प्रांतों के प्रतिनिधि जब अपने पारंपरिक परिधान में एक साथ सामूहिक वंदे मातरम गान में उपस्थित हुए हुए तो ऐसा लगा कि लघु भारत उमड़ पड़ा है।

गत 21 नवंबर 2024 को प्रातःकाल से ही अभाविप प्रतिनिधियों का आगमन आरंभ हो चुका था। लगभग एक माह की मेहनत के बाद अहिल्याबाई नगर का निर्माण किया गया था, जिसे बनाने और सजाने के लिए सैकड़ों लोगों ने दिन-रात मेहनत की। अधिवेशन स्थल का मुख्य सभागार अमर बलिदानी राम प्रसाद बिस्मिल की स्मृति में बनाया गया था। अहिल्याबाई नगर परिसर में राष्ट्र संत

## ओड़िसा प्रांत संरचना में परिवर्तन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के कार्य दृष्टिकोण हेतु बनाए गए ओड़िसा प्रांत सरंचना में बड़ा परिवर्तन हुआ है। अधिवेशन में लिए गए निर्णय के अनुसार ओड़िसा प्रान्त को दो हिस्सों में परिवर्तित करके ओड़िसा पूर्व एवं ओड़िसा पश्चिम प्रान्त बनाए गए हैं। अब अभाविप कार्य संरचना में कुल 46 प्रांत हो गए हैं। ओड़िसा पूर्व का केन्द्र भुवनेश्वर बनाया गया है, जिसके प्रांत संगठन मंत्री बुद्धदेव बाघ होंगे तथा ओड़िसा पश्चिम का केन्द्र संभलपुर होगा, जिसके प्रांत संगठन मंत्री निकुंज बिहारी पांडा होंगे।

## नगर स्तर पर होगा खेल कुंभ का आयोजन

भारत के परंपरागत खेल कुश्ती, अखाड़ा, थांग-ता, कलरीपायट्टु, खो-खो, रस्साकशी, मलखंब, हेक्को, स्टापु, छऊ और पाइका अखाड़ा, कबड्डी, शूटिंग बॉल, लागोरी और लंगडी, गतका, रोल बॉल, धूप और कौड़ी खेल, सिलंबम, तीरंदाजी, गिल्ली-डंडा स्थित अन्य देशी खेलों को पुनर्जीवित के उद्देश्य से अभाविप गतिविधि 'खेलो भारत' के माध्यम से नगर स्तर पर खेल कुंभ का आयोजन करेगी। अधिवेशन में लिए गए निर्णय की जानकारी देते हुए खेलो भारत के राष्ट्रीय प्रमुख प्रदीप शेखावत ने बताया कि भारत की मिट्टी से जुड़े परंपरागत खेलों को पुनर्जीवित करने के लिए देश भर में नगर स्तर के इकाईयों में खेल कुंभ का आयोजन किया जाएगा। इसमें विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले अधिकतम छात्रों की सहभागिता रहेगी। खेल कुंभ के माध्यम से मैराथन, ऊंची कूद, लंबी कूद, तीरंदाजी, रस्साकस्सी, कुश्ती आदि की प्रतियोगिता कराई जाएगी। खेल कुंभ में हिस्सा लेने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र, पदक एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया जाएगा।

अवेद्यनाथ मंडप को भी तैयार किया गया, जहां लगायी गई प्रदर्शनी में गोरखनाथ मंदिर के पूर्व पीठाधीश्वर एवं सामाजिक समरसता के अग्रदूत महंत अवेद्यनाथ के जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों के साथ ही अभाविप के 76 वर्षों का इतिहास, उत्तर प्रदेश का स्वाधीनता आन्दोलन, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन, विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत में साहित्य के योगदान को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया। अधिवेशन स्थल पर लगाए गए स्टालों ने विभिन्न प्रांतों की विशेष सामग्रियों को सभी के सामने रखा, जो भारत की विविधता के संगम का दर्शन करा रही थी।

70वें राष्ट्रीय अधिवेशन के पूर्व संध्या पर यानी 21 नवंबर को महंत अवेद्यनाथ पर केंद्रित प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव चपंत राय ने किया। उद्घाटन के बाद जब श्री राय ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तो वह भी अभिभूत हो गए । प्रदर्शनी को देखने के बाद हर कोई उन छात्रों एवं अन्य लोगों की प्रशंसा के लिए बाध्य हो गया, जिन्होंने दिन-रात मेहनत करके चित्रों को जीवंत रूप दिया था। अहिल्याबाई होल्कर नगर में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर अभाविप द्वारा आयोजित मानवंदना यात्रा का समापन भी गत 21 नवंबर को हुआ। मानवंदना यात्रा का आरम्भ गत 13 नवंबर को महेश्वर (मालवा प्रान्त) से हुआ था। महेश्वर से आरम्भ हुई यात्रा इंदौर, भोपाल, सतना, कटनी, काशी, बलिया होते हुए गोरखपुर पहुंची। इस दौरान मानवंदना यात्रा ने तेरह सौ किलोमीटर की दूरी तय की। मानवंदना यात्रा के रथ को पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर की राजधानी महेश्वर का स्वरूप दिया गया था, जिसमें अहिल्याबाई की मूर्ति स्थापित की गई थी। यात्रा का उद्देश्य युवाओं को पुण्यश्लोक अहिल्याबाई से परिचित कराना था, जिन्होंने सनातन संस्कृति से जुड़े हर पक्ष को ध्यान में रखकर सत्ता का संचालन किया था।

अधिवेशन से पहले अभाविप की एक-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद और केंद्रीय कार्यसमिति बैठक आयोजित की गई, जिसमें शिक्षा, समाज से जुड़े विषयों पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान के भाषण पर आधारित पुस्तक 'अभाविप परिवर्तनकारी छात्र आंदोलन' का विमोचन भी हुआ।

70वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन गत 22 नवंबर 2024 को हुआ। उद्घाटन से पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.

राजशरण शाही एवं निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के बाद वर्ष भर के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए निर्वतमान राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने जब यह बताया कि अभाविप कार्यकर्ताओं की संख्या 55,12,470 हो गई है, तब सभागार कार्यकर्ताओं की हर्ष ध्वनि से गूंज उठा। महामंत्री प्रतिवेदन के बाद पुनर्निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही एवं नव निर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी ने अपने दायित्व को ग्रहण किया। राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन तमिलनाडु निवासी एवं विश्व प्रसिद्ध कंपनी जोहो कारपोरेशन के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) श्रीधर वेम्बू ने किया। उद्घाटन समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी, मंत्री शालिनी वर्मा, स्वागत समिति अध्यक्ष एवं महापौर (गोरखपुर) मंगलेश श्रीवास्तव, सामाजिक कार्यकर्ता कामेश्वर सिंह, गोरक्ष प्रांत के प्रांत अध्यक्ष डा. राकेश प्रताप सिंह, प्रांत मंत्री मयंक राय सहित अभाविप के कार्यकर्ता उपस्थित थे। अपने संबोधन में श्रीधर वेम्बू ने अभाविप कार्यकर्ताओं को आत्मविश्वास, आत्म प्रेरणा एवं आत्म-अनुशासन का मंत्र दिया।

उद्घाटन समारोह के बाद अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नागेश ठाकुर ने 'अभाविप कार्यकर्ता निर्माण की कार्यशाला' पर व्याख्यान दिया। तत्पश्चात उनके भाषण पर विस्तार से गटों में चर्चा की गई। रात्रि में हुए अनौपचारिक सत्र में प्रतिनिधियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अधिवेशन के दूसरे दिन राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री गोविंद नायक ने 'पंच परिवर्तन के वाहक युवा' विषय पर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इसके बाद समर्थ भारत-2047 की संकल्पना विषय पर युवा मंच के आयोजन के साथ ही सामानांतर सत्र एवं क्षेत्रशः युवा मंच का आयोजन किया गया। अधिवेशन में पांच प्रस्ताव भी पारित हुए। दूसरे दिन रात्रि में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं की मनमोहक प्रस्तुति ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

अधिवेशन के तीसरे एवं अंतिम दिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के साथ ही शिक्षा, समाज, पर्यावरण, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले युवाओं को प्रदान किया जाने वाला प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार-2024 प्रदान किया। 2024 का युवा पुरस्कार ट्रेनिंग एंड एजुकेशन सेंटर फॉर हियरिंग इम्पेयर्ड (टीच) के सह-संस्थापक दीपेश नायर को दिया गया। अंतिम दिन केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य निधि त्रिपाठी बहुगुणा ने 'विमर्श निर्माण में परिसरों की भूमिका' विषय पर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। साथ ही नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेन्द्र सोलंकी

## भगवान बिरसा मुंडा के सार्ध शती पर वर्ष भर होंगे कार्यक्रम

भगवान बिरसा मुंडा के सार्ध शती यानी 150वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर अभाविप देश के शैक्षिक परिसरों में वर्ष भर विविध कार्यक्रमों का आयोजन करेगी। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी, भाषण सहित अन्य गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को उनके जीवन चरित्र से परिचित कराया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 15 नवंबर को बिरसा मुंडा का सार्ध शती वर्ष प्रारंभ हो गया है। गोरखपुर में संपन्न राष्ट्रीय अधिवेशन में उनके सार्ध शती के उपलक्ष्य पर देश भर में कार्यक्रम करने का निर्णय लिया है। निर्णय के अनुसार वर्ष भर कार्यक्रमों की श्रृंखला चलती रहेगी।

## राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा का आयोजन जनवरी में

अभाविप प्रकल्प अंतर-राज्य छात्र जीवन दर्शन (सील) द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाने वाली 'राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा' जनवरी माह में आयोजित की जाएगी। ज्ञात हो कि अभाविप द्वारा एकात्मता यात्रा का आयोजन 1966 से किया जा रहा है। यात्रा का उद्देश्य उत्तर-पूर्व के राज्यों को शेष भारत से जोड़ने, उनकी संस्कृति-परंपरा से परिचित एवं एकात्मता स्थापित कराना होता है। यात्रा में सहभाग लेने वाले छात्र-छात्रा किसी होटल या सराय की जगह, उस स्थान में रहने वाले किसी स्थानीय परिवार के घर में ठहरते हैं। इससे उनका परिवार के साथ जीवन भर का आत्मीय संबंध बन जाता है।

## दिल्ली में होगा छात्रा, जनजातीय एवं पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद का आयोजन

दस वर्ष बाद पुनः आगामी 8 मार्च से 10 मार्च के मध्य राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में छात्रा, जनजातीय एवं पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद का आयोजन किया जाएगा। इससे पहले अक्टूबर 2015 में यह आयोजन दिल्ली में हुआ था। छात्रा संसद में महिलाओं की सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन जैसे विषयों पर मंथन होगा, जिसमें देश भर की छात्राओं की भागीदारी होगी। इसी तरह जनजातीय समाज के युवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं स्वावलंबन पर विमर्श हेतु जनजातीय संसद का आयोजन किया जाएगा, जिसमें जनजातीय बाहुल्य सभी प्रदेश के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे। संसद में जनजातीय समाज की संस्कृति, परंपरा, गौरवशाली इतिहास के साथ-साथ उनकी शिक्षा एवं रोजगार पर चर्चा की जाएगी। पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद में पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी राज्यों के छात्र एवं युवा हिस्सा लेंगे। संसद में पूर्वोत्तर की कौशल, संस्कृति, रोजगार, शिक्षा इत्यादि पर चर्चा होगी।

## जारी रहेगा 'परिसर चलो अभियान'

शैक्षिक परिसरों में छात्रों की घटती संख्या के समाधान के लिए अभाविप द्वारा चलाया जा रहा 'परिसर चलो अभियान' पूर्ववर्त जारी रहेगा। अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री वीरेन्द्र सोलंकी ने कहा कि छात्रों की उपस्थिति को सुनिश्चित करने एवं परिसर को जीवंत बनाने में अभाविप के अभियान को सकारात्मक प्रतिसाद मिला है। इसलिए इस वर्ष भी परिसर चलो अभियान जारी रहेगा। उल्लेखनीय है कि अभाविप के इस अभियान का उद्देश्य परिसरों को जीवंत बनाने एवं परिसर संस्कृति को पुनर्स्थापित करना है। अभियान के माध्यम से छात्रों को परिसर में आने के लिए प्रेरित किया जाता है, ताकि वर्ग में विद्यार्थियों की अधिकतम उपस्थिति सुनिश्चित हो सके।

ने आगामी कार्यक्रमों एवं अभियानों की घोषणा की। अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही द्वारा नई कार्यकारिणी की घोषणा किए जाने के बाद अधिवेशन व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं का परिचय हुआ। तत्पश्चात अभाविप राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने समापन भाषण दिया। सायंकाल वन्देमातरम के गान के साथ ध्वजावतरण हुआ, इसके साथ ही तीन दिवसीय अभाविप 70वें अधिवेशन का समापन हो गया ।

अधिवेशन के दौरान देश के भिन्न-भिन्न राज्यों, विविध संस्कृतियों एवं विविध परम्पराओं से जुड़े अभाविप कार्यकर्ता, जिस तरह एक साथ-एक समूह में रहकर सम्पूर्ण आयोजन में शामिल हुए, वह ऐतिहासिक ही कहा जाएगा। अधिवेशन में विभिन्न प्रांतों से कुल 1,222 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिसमें मित्र राष्ट्र नेपाल के 51 प्रतिनिधि भी शामिल थे।

## असफलताओं से कभी भयभीत न हों, इससे मिलती है संकल्प शक्ति : श्रीधर वेम्बू

अभाविप के 70 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन करने वाले उद्योगपति श्रीधर वेम्बू ने प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि सबसे बड़े छात्र संगठन

अभाविप के माध्यम से उन्हें छात्रों को संबोधित करने का जो अवसर मिला है, वह अभूतपूर्व है। अपने जीवन संघर्ष से जुड़े प्रसंगों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत को तकनीक और रोजगार की आवश्यकता है। सरकारी क्षेत्र में रोजगार सृजन की क्षमता उतनी नहीं है, जितनी निजी क्षेत्र में है। सरकार हर किसी को रोजगार नहीं दे सकती है, यह समझना ही होगा। ऐसे में निजी क्षेत्र को और अधिक विकसित करने के साथ ही देश में उद्यमियों को पैदा करने की प्रबल जरुरत महसूस की जा रही है ।

श्रीधर वेम्बू ने कहा कि भारत को आज स्वावलंबन की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता है। आत्मविश्वास, आत्म प्रेरणा एवं आत्म-अनुशासन व्यक्ति के जीवन

## पंच परिवर्तन का आह्वान

अभाविप का मानना है कि व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण एवं समाज निर्माण से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण है। गोरखपुर में संपन्न राष्ट्रीय अधिवेशन में अभाविप ने समाज में पंच परिवर्तन का आह्वान किया है। अभाविप कार्यकर्ता देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में व्यापक अभियान चलाएंगे। इसके लिए छोटे-छोटे कार्यक्रम आयोजित कराने की व्यापक तैयारी की जा रही है। अभाविप के कार्यकर्ता युवाओं से संवाद करेंगे और उन्हें पंच परिवर्तन के समरसता, कुटुंब/परिवार प्रबोधन, पर्यावरण, स्व का जागरण एवं नागरिक कर्तव्य से अवगत कराएंगे, ताकि अनुशासन एवं देशभक्ति से ओतप्रोत युवा वर्ग अपने देश को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करें। पंच परिवर्तन उभरते भारत की चुनौतियों का समाधान करने में समर्थ है।

## अभाविप मनाएगी 'यशवंत शती'

अभाविप के शिल्पकार एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. यशवंत राव केलकर के जन्म शती को अभाविप 'यशवंत शती' के रूप में मनाएगी। 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया है कि संगठन शिल्पी प्रा. केलकर जन्मोत्सव के 100वें वर्ष पर संगोष्ठी, सेमिनार जैसे विविध कार्यक्रम का आयोजन कर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से कार्यकर्ताओं को अवगत कराया जाएगा। अभाविप को अखिल भारतीय स्वरूप देने के साथ-साथ अभाविप के संगठनात्मक विस्तार, सुदृढ़ीकरण के साथ ही वैचारिक अधिष्ठान, कार्यकर्ता विकास तथा कार्यपद्धति को स्थापित एवं निर्धारित करने में प्रा. केलकर की उल्लेखनीय भूमिका रही है।

को सार्थक बनाने में महती भूमिका निभाते हैं। इसमें से सबसे महत्वपूर्ण आत्म-अनुशासन के गुण अभाविप कार्यकर्ताओं में परिलक्षित होते हैं। हमें असफलताओं से कभी भयभीत नहीं होना चाहिए, इससे संकल्प शक्ति मिलती है और इस अर्जित शक्ति एवं दृढ़ विश्वास के साथ जब व्यक्ति कार्य करता है, तब वह निश्चित रूप में सफलता प्राप्त करता है। आज हम विकसित भारत की संकल्पना की बात करते हैं। इसके लिए देश के केवल एक जिले को नहीं, अपितु समूचे भारत के सभी जिलों को विकसित होना पड़ेगा। संस्कृत में भी कहा गया है 'धर्मस्य मूलं अर्थः' जिसका मतलब धर्म का आधार अर्थ है। यदि आर्थिक मजबूती नहीं रहेगी तो धर्म भी पूर्ण रूप से नहीं रह पाएगा। भारत को नवाचार का केंद्र बनाने का समय आ गया है। इसके लिए शिक्षा, तकनीकी विकास और सामाजिक समर्पण को प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने कहा कि संतुलन, समरसता और सद्भाव से ही हम विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे, किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि इसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति के संवर्धन से जुड़ा हो। हमें प्रकृति के सामंजस्य के साथ चलना होगा। स्व-रोजगार पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि सरकारें सभी को नौकरियां प्रदान नहीं कर सकती है। वह इसके लिए सुलभ वातावरण निर्मित कर सकती है। इसलिए स्वावलंबन काफी महत्वपूर्ण है। मुझे आज इस कार्यक्रम में आकर काफी प्रसन्नता हुई और इस बात का भी हर्ष है कि अभाविप का कार्यकर्ता निरंतर इस पथ पर आगे बढ़ते हुए समाज जागरण का कार्य कर रहा है।

उन्होंने कहा कि उद्यम क्षमता को विकसित करने के लिए धन की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी आवश्यकता विचार की है। विचार के साथ ही आंतरिक आत्मविश्वास, संकल्प शक्ति और अनुशासन भी जरुरी है। इसलिए सफलता के तीन मंत्रों को हर समय याद रखना होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि असफलता का सामना करने से संकल्प शक्ति और दृढ़ इच्छाशक्ति पैदा होती है, जो सफलता की ओर ले जाती है। इसलिए सभी के अंदर सीखने की इच्छाशक्ति पैदा हो, ऐसे प्रयास करने होंगे।

अभाविप कार्यकर्ताओं को आगामी पचास वर्ष की योजना बनाकर कार्य करने का सन्देश देते हुए श्रीधर वेम्बू ने कहा कि भारत को सद्भाव प्रकृति से मिला है। प्रकृति से सामंजस्य इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि पूरा विश्व वर्तमान समय में पर्यावरण से जुडी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। भारत ने विश्व को 'वसुधैव कुटुंबकम' का सन्देश दिया है। यह सन्देश पर्यावरण की सुरक्षा एवं पर्यावरण के साथ सामंजस्य

बनाने का सन्देश भी देता है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सभी को मिल कर प्रयास करना ही होगा, तभी स्थितियों में बदलाव लाया जा सकेगा।

## किसी घटना या परिस्थिति की उपज नहीं है अभाविप : डा. राजशरण शाही

अभाविप के पुनर्निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.राजशरण शाही ने भारतीय परम्परा में ध्येय की सिद्धि के लिए काल का महत्व, स्थान एवं अधिष्ठान की पवित्रता पर जोर देते हुए कहा कि अभाविप का 70वां राष्ट्रीय

अधिवेशन उस पावन भूमि पर हो रहा है, जो भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के महापरिनिर्वाण की स्थली है, संत कबीर का निर्वाण स्थल है, स्वामी योगानंद, हनुमान प्रसाद पोद्दार की पवित्र भूमि है। यह वह भूमि है, जहां वीर रामप्रसाद का आत्मोसर्ग हुआ। साधना, सिद्धि एवं सृजन की भूमि पर अभाविप का राष्ट्रीय अधिवेशन सभी को प्रेरणा देगा ।

गुरू नानक, अहिल्याबाई, दयानन्द सरस्वती, बिरसा मुंडा, गीता प्रेस, काकोरी कांड, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना और प्रा. यशवंत राव केलकर के जन्म शती वर्ष की चर्चा करते हुए डा. शाही ने कहा कि अभाविप ने अब तक की यात्रा में प्रतिमान को गढ़ा है। यह किसी घटना-परिस्थिति की उपज नहीं है। यह अभाविप की 75 वर्ष की पूरा कर अमृत काल में प्रवेश करने की पवित्र यात्रा का वर्ष भी है। इसलिए अभाविप के सभी साधकों का साधना की भूमि पर अभिनन्दन है।

स्वतंत्रता संघर्ष को भारत के स्व-जागरण का संघर्ष बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत को एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, जो राष्ट्र और संस्कारों के विकास के लिए प्रतिबद्ध हो। अभाविप ने स्थापित किया है कि छात्र-शक्ति ही राष्ट्र-शक्ति है। अभाविप ने समाज में जो प्रतिमान खड़ा किया है, वह वैचारिक अधिष्ठान एवं कार्यप्रक्रिया की शुचिता का परिणाम है। अभाविप की यह यात्रा प्रश्न या समस्या खड़ा करने की नहीं, बल्कि समाधान की यात्रा है। अभाविप की यात्रा बढ़ती जा रही है। यह व्यक्ति से, समाज से राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया है।

पंच प्रतिबद्धता की चर्चा करते हुए डा. शाही ने कहा कि भारत विश्व में सबसे अधिक युवा जनसंख्या वाला देश है। यह पंच परिवर्तन का आधार होगा। इसलिए स्व के जागरण की प्रबल आवश्यकता है और स्व के आधार पर ही भारत का विकास होगा। यह लोक मंगल, लोक कल्याण और वसुधैव कुटुंबकम की यात्रा है। समरसता के साथ ही सभी को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना ही होगा। भारत का दर्शन परस्परता अनुकूलता का दर्शन है। अधिकार को छोड़ कर कर्तव्य का बोध ही भारत को विकसित राष्ट्र में परिवर्तित करेगा। विकसित भारत के लिए पंच परिवर्तन के साथ युवा जब आगे बढ़ेंगे, तब इस संकल्प की साधना करनी होगी।

## बहुआयामी वट वृक्ष का रूप ले चुकी है अभाविप : वीरेन्द्र सोलंकी

अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन संबोधित करते हुए नव निर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी

ने कहा कि अभाविप के विराट स्वरूप का सबसे बड़ा कारण छात्र शक्ति है। अभाविप ने अब तक की यात्रा में कई मील के पत्थर स्थापित किए हैं। भारत भारती अभियान से लेकर आपदा के समय मानवीय सहायता के लिए कई अभियान चलाने वाली अभाविप एक बहुआयामी वट वृक्ष को रूप ले चुकी है। विभिन्न आयामों के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण के साथ ही अभाविप राष्ट्र निर्माण का कार्य कर रही है। देशहित में काम करने वाली युवा शक्ति को खड़ा करने वाली अभाविप जनता को जागृत करने का कार्य भी कर रही है। आगामी वर्षों में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा क्षेत्र की त्रुटियों को दूर करना ही होगा। समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान में अभाविप कार्यकर्ता अपने रचनात्मक प्रयासों से परिवर्तन लाने का काम कर रहे हैं। ■

# पारित हुए पांच प्रस्ताव

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अनुचित शुल्क वृद्धि पर नियंत्रण, मणिपुर हिंसा का समाधान करे सरकार, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की सधी हुई कूटनीति, शिक्षण संस्थानों की गिरती गुणवत्ता चिंताजनक एवं जैविक खाद्यान्नों के प्रयोग का आह्वान जैसे विषय पर पांच प्रस्ताव पारित किए गए हैं। अभाविप ने अपने प्रस्ताव में निजी तथा सरकाराधीन विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षण शुल्क, छात्रावास एवं अन्य शुल्कों में अनुचित शुल्क वृद्धि पर चिंता व्यक्त की है। अभाविप ने इस प्रस्ताव में कहा है कि सामान्य विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अंतिम विकल्प के रूप में उपलब्ध राज्य एवं केंद्रीय विश्वविद्यालयों में भी शुल्क वृद्धि होना दुर्भाग्यपूर्ण है। अभाविप ने केंद्र और राज्य सरकारों से मांग की है कि शिक्षण संस्थानों में लिए जाने वाले विभिन्न प्रकार के शुल्क नियमन हेतु लोकसभा एवं देश की सभी विधानसभाओं में शिक्षा शुल्क नियमक विधेयक पारित किया जाए, जिससे अनुचित शुल्क वृद्धि को नियंत्रित किया जा सके। वहीं दूसरे प्रस्ताव में अभाविप ने मणिपुर की समस्या का त्वरित समाधान करने की मांग की है। प्रस्ताव में कहा गया है कि मणिपुर की जनता हिंसा से जुडी समस्या का स्थायी समाधान चाहती है, ताकि प्रगति और विकास की स्वाभाविक गति से आगे बढ़कर वह भारत की एकता और अखंडता को सुदृढ़ करने में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके। मणिपुर हिंसा की गंभीरता और इसकी विशेष परिस्थिति पर संवेदनशीलता से विचार करते हुए केंद्र एवं राज्य सरकारों को इस दिशा में समेकित प्रयास करने की आवश्यकता है। अभाविप के एक अन्य प्रस्ताव में भारत की सधी हुई कूटनीति की प्रशंसा करते हुए कहा गया कि वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती सकारात्मक छवि उसे एक विश्वसनीय और शांतिपूर्ण भागीदार बनाती है, जो न केवल अपने, बल्कि पूरे विश्व के हितों के लिए कार्य करता है। भारत ने अपनी दूरगामी रणनीति के तहत ही विश्व के अन्यान्य परस्पर विरोधी देशों के साथ भी संतुलित व्यवहार और संबंध स्थापित किया है। भारत की समृद्ध, सांस्कृतिक एवं प्रभावशाली विरासत ही भारत को उदयमान वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर रही है। वर्तमान समय में भारत की सांस्कृतिक विशेषताओं और उपलब्धियों के आधार पर ही विश्व समुदाय की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। अभाविप ने अपने चौथे प्रस्ताव में शिक्षण संस्थानों की गिरती गुणवत्ता पर चिंता व्यक्त की है। शिक्षण संस्थानों की स्थिति को लेकर पारित प्रस्ताव में कहा गया है कि भारत में शैक्षिक संस्थानों की गिरती गुणवत्ता के परिणाम स्वरुप गुणवत्तायुक्त शिक्षा एक बड़ी चुनौती है। शैक्षिक संस्थानों का युगानुकूल उन्नयन करते हुए भौतिक सुविधाएं एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता से ही संस्थान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में समर्थ हो सकते हैं। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें राष्ट्रीय और समाज जीवन के अनुकूल निर्मित करना शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है। किंतु इसके अनुरूप शैक्षिक संस्थान अपने को ढालने में विफल सिद्ध हो रहे हैं। इस स्थिति में छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप युगानुकुल शिक्षण प्रणाली बनाने की आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रभावी प्रबंधन के माध्यम से ऐसे शैक्षिक संस्थान तैयार हो, जो गुणवत्ता युक्त शिक्षा की पहुंच सर्वसामान्य तक सुनिश्चित कर सकें। अभाविप ने देश में जैविक खाद्यान्नों के प्रयोग का आह्वान भी किया है। इस विषय में पारित प्रस्ताव में कहा गया है कि कृषि आधारित खाद्यान्नों और भोज्य पदार्थों की विविधता भारत की महत्वपूर्ण विशेषता है। जलवायु और ऋतुओं के अनुरूप परिवर्तित भोजनशैली भारतीय समाज के स्वस्थ जीवन का आधार रही है, किंतु खाद्य पदार्थों में मिलावट की मात्रा चिंताजनक रूप से बढ़ती जा रही है। इससे आमजन की पोषण स्थिति, स्वास्थ्य तथा शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का क्षरण हो रहा है और शारीरिक एवं मानसिक विकार निरंतर उत्पन्न हो रहे हैं। ऐसे हानिकारक भोज्य पदार्थों का प्रभाव भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर रहा है। अभाविप का यह सुविचारित मत है कि जैविक खेती की दिशा में आगे बढ़कर देशी एवं प्राकृतिक पदार्थों को प्रोत्साहित कर मिलावट युक्त खाद्यान्न की समस्या का निराकरण किया जा सकता है। विभिन्न कानून के माध्यम से खाद्य उत्पादों की शुद्धता सुनिश्चित करते हुए अपमिश्रण करने वालों के विरुद्ध सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। इसलिए विभिन्न कानूनों का कड़ाई से पालन कराया जाना अत्यावश्यक हो गया है। ■

# राष्ट्रीय एकात्मता का दर्शन कराती है अभाविप की प्रदर्शनी : चंपत राय

अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में गत 21 नवंबर को राष्ट्र संत महंत अवेद्यनाथ पर आयोजित भव्य प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चंपत राय एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रा. पूनम टंडन ने किया। इस अवसर पर चंपत राय ने कहा कि अभाविप का यह राष्ट्रीय अधिवेशन राष्ट्र की एकात्मता का दर्शन कराता है। जहां संपूर्ण विश्व मात्र अपने अधिकारों की ही चर्चा करते हुए संघर्ष कर रहा है, वही अभाविप देश के विभिन्न शिक्षण परिसरों में युवाओं के बीच कर्तव्यभाव जागरण का कार्य करती है। भारत के युवाओं ने देश को महत्वपूर्ण दिशा दी है। स्वामी विवेकानंद, देवी अहिल्याबाई होल्कर, दीनदयाल उपाध्याय ने युवावस्था में समाज जागरण का जो कार्य किया है, वह अनुकरणीय है।

श्री राय ने कहा कि उन्हें महर्षि अवेद्यनाथ के साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय एकात्मता को लेकर उनके चिंतन ने उन्हें बहुत प्रभावित किया है। आज यह दूसरा अवसर है, जब अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में उन्हें सम्मिलित होने का अवसर मिला है, जो उनके लिए हर्ष का विषय है। प्रदर्शनी में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं राम मंदिर आंदोलन में राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ का योगदान तथा भारतीय शिक्षा पद्धति के पुनरुथान हेतु उनके द्वारा गोरखपुर में 1932 में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के बहुमूल्य योगदान को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है। साथ ही प्रदर्शनी में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बंधित अभिलेखागार, जिसमें भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की विजय गाथा तथा लोकमाता अहिल्याबाई द्वारा स्थापित की गई आदर्श सुशासन व्यवस्था को जीवंत रूप में दर्शाया गया। विशिष्ट भारतीय संस्कृति एवं भारतीय त्योहारों को भी कलाकृतियों के माध्यम से प्रदर्शनी स्थल पर वर्णित किया गया। अभाविप की इस भव्य प्रदर्शनी में कुल 7 भागों में 14 कलाविथियों में 274 कलाकृतियों के माध्यम से दर्शाया गया। इस दौरान अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एम नागलिंगम, राष्ट्रीय

मंत्री बुद्धदेव बाघ, स्वागत समिति उपाध्यक्ष प्राचार्य प्रदीप राव, गोरखपुर महानगर अध्यक्ष डा. विवेक शाही एवं महानगर मंत्री शुभम गोविंद राय की उपस्थिति रही।

## प्रदर्शनी में महंत अवेद्यनाथ के जीवन और अभाविप की यात्रा का दर्शन

अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में लगायी गई प्रदर्शनी में गोरखनाथ मंदिर के पूर्व पीठाधीश्वर एवं सामाजिक समरसता के अग्रदूत महंत अवेद्यनाथ के जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों को सामने रखा गया। राष्ट्र संत महंत अवेद्यनाथ मंडप नाम से बनाए गए प्रदर्शनी स्थल के मुख्य द्वार से अन्दर जाने पर महंत अवेद्यनाथ की प्रतिमा को स्थापित किया गया। साथ ही नाथपंथ का अभ्युदय, गोरखनाथ मन्दिर, महन्त परंपरा, योगी सम्प्रदाय और उसका आदर्श, गोरख पंथ के उप-सम्प्रदाय, गोरखनाथ मन्दिर के सामाजिक सरोकार, चिकित्सा शिक्षा एवं चिकित्सा भंडारा, गो-संवर्द्धन, सामाजिक समरसता एवं अस्पृश्यता निवारण, महायोगी की खिचड़ी, क्रियात्मक योग, नाथ पंथ और भक्ति आंदोलन सहित अन्य विशेषताओं को चित्रों को माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

प्रदर्शनी में अभाविप के 75 वर्षों का इतिहास, पहले अधिवेशन से लेकर 69 अधिवेशन, अधिवेशनों में पारित प्रस्ताव, आयाम, वार्षिक गतिविधि, राष्ट्रीय कार्यकम, आंदोलन, सदस्यता अभियान, बैठक सहित जनजाति गौरव दिवस को प्रदर्शित किया गया। अभाविप के सभी प्रांतों की विविधता को प्रदर्शनी में हस्तनिर्मित चित्रों के माध्यम से एक विशिष्ट स्वरूप में दर्शाया गया।

उत्तर प्रदेश का राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन, विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत में साहित्य का योगदान आदि विषय की झलक को दर्शाने वाली प्रदर्शनी में गोरखपुर का परिचय, बाबा राघवदास, अमर बलिदानी राम प्रसाद बिस्मिल, बन्धू सिंह, फ़िराक गोरखपुरी, मुंशी प्रेमचद सहित कई महापुरुषों के चित्र एक अलग आभा प्रदान करते दिखाई दिए। देवरहा बाबा, नानाजी देशमुख, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, राहुल सांकृत्यायन, मंगल पांडे, चौरी-चौरा, कुशीनगर के रामभर स्तूप, मगहर, ऋषि वशिष्ठ, टेराकोटा शिल्प, परमहंस योगानन्द, काकोरी ट्रेन कांड जैसी घटनाओं को भी प्रदर्शनी में सभी ने देखा। गोरखपुर में देश का पहला शिशु मंदिर, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गीता प्रेस, हनुमान प्रसाद पोद्दार, कल्याण पत्रिका का सचित्र वर्णन प्रदर्शनी की विशेषता रही। ■

# अभाविप की सदस्यता हुई 55 लाख पार टूटे सारे कीर्तिमान

गोरखपुर में आयोजित अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने बताया कि अभाविप ने अपने पूर्व के सभी कीर्तिमानों को ध्वस्त करते हुए नया कीर्तिमान बनाया है। अभाविप की सदस्यता 55 लाख पार कर चुकी है। अब तक प्राप्त आंकड़े के अनुसार इस वर्ष परिषद की सदस्यता 55,12,470 हो गई। इनमें 32,30,127 छात्र, 22,55,394 छात्राएं, 25,550 प्राध्यापक तथा 1399 अन्य लोग शामिल हैं।

2023-24 के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए निर्वतमान राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि अभाविप केवल प्रश्न ही नहीं उठाती, बल्कि उसके समाधान होने तक संघर्षरत रहती है। सतत सक्रियता के परिणामस्वरूप अभाविप की स्वीकार्यता प्रत्येक छात्रों के बीच है। अभाविप, निराशा के घने बादलों के बीच आशा की किरण की तरह कार्य करती है। अभाविप के अमृत महोत्सव वर्ष में अभाविप की पहुंच सर्वाधिक छात्रों के मध्य बढ़ी है। इस वर्ष सर्वाधिक सदस्यता हेतु श्रेणीशः तीन चरणों में अभियान चलाए गए। विशेषतः प्राध्यापक सदस्यता के लिए अधिकतम प्रांतों द्वारा विशेष योजना से सदस्यता की गई। सदस्यता अभियान को प्रभावी एवं परीणामपरक बनाने के लिए पोस्टर, पर्चे, दीवार लेखन, डिजिटल अभियान इत्यादि के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। इस वर्ष संपूर्ण देश में चलाए गए सदस्यता अभियान के कारण अभाविप के सदस्यों की संख्या 55,12,470 हो चुकी है ।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस अर्थात अभाविप के स्थापना दिवस पर संपूर्ण देश में 5,507 स्थानों पर 6,655 विविध कार्यक्रम संपन्न हुए। इनमें कुल 11,08,966 छात्र-छात्राओं की सहभागिता रही। डा. भीमराव रामजी राव आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस एवं जयंती के अवसर पर अभाविप द्वारा संपूर्ण देश में सामाजिक समरसता दिवस पर 1,667 स्थानों पर 2,144 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 1,96,771 छात्र-छात्राओं की सहभागिता रही। इसी तरह स्वामी विवेकानंद की जन्म जयंती के अवसर पर 3,399 इकाइयों द्वारा 6,154 स्थान पर 7,370 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें 13,47,435 सहभागिता रही। उल्लेखनीय रूप में केरल में छात्र नेता सम्मेलन, खेलकूद प्रतियोगिता, आंध्र प्रदेश में रक्तदान शिविर, कोंकण में चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, देवगिरी में राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान पर व्याख्यान एवं मशाल यात्रा, विदर्भ में निबंध, सामान्य ज्ञान, चित्रकला स्पर्धा तथा स्वास्थ्य जांच शिविर, अवध में बीस हजार फिट के स्वामी विवेकानंद की त्रि-आयामी पेंटिंग, ब्रज में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं कला संगम का आयोजन, उत्तराखंड में रक्तदान शिविर एवं योग प्रतियोगिता, जयपुर में संगोष्ठी एवं मैराथन, जोधपुर में रंगोली एवं मेहंदी प्रतियोगिता तथा रन फॉर भारत मैराथन का आयोजन, चित्तौड़ में 850 से अधिक छात्रों की सहभागिता में युवा उद्घोष का आयोजन, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर देश की विभिन्न इकाइयों द्वारा अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

उन्होंने बताया कि गत 13 अगस्त को पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर की पुण्यतिथि के निमित्त देशभर में 373 नगर इकाइयों में 419 कार्यक्रम हुए, जिनमें 65,184 छात्र-छात्राओं की सहभागिता रही। मध्य भारत में राखी बनाने की प्रतियोगिता, छत्तीसगढ़ में नारी तू नारायणी संगोष्ठी एवं 301 कन्याओं को भोजन जैसे भिन्न-भिन्न कार्यक्रम संपन्न हुए। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश भर के सभी कार्यालयों पर ध्वजारोहण, जनजातीय क्रांतिवीरों को नमन करने हेतु गत 15 नवंबर को देशभर

में जनजाति गौरव दिवस का आयोजन किया गया।

उन्होंने बताया कि ज्ञानार्जन की प्रक्रिया का उच्चतम सोपान हमारे शैक्षणिक परिसर होते हैं, जिनका प्रयोजन ही विद्यार्थी को समाजोन्मुखी आत्म-विकास के साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से हुआ है। समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों को परिसरों में ले जाने हेतु होते जा रहे आग्रहों के अनुसार आनंदमयी सार्थक विद्यार्थी जीवन को शैक्षणिक परिसरों के केंद्र में स्थापित करने की महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एवं आनंदमय और सार्थक विद्यार्थी जीवन के सन्देश को प्रत्येक शैक्षणिक परिसर एवं विद्यार्थी तक उसके समग्र एवं करणीय स्वरुप में पहुंचाने की दृष्टि से देशभर में आनंदमयी सार्थक छात्र जीवन अभियान चलाया गया। इसी तरह देश भर के कैंपस में छात्रों की अनुपस्थिति को देखते हुए 'परिसर चलो अभियान' के माध्यम से परिसर में छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने का प्रयास भी किया गया।

राष्ट्रीय कला मंच द्वारा आयोजित नेशनल स्टूडेंट्स फ़िल्म फ़ेस्टिवल (एनएसएफएफ) एक बड़ी सफलता थी, जिसे गत 16 और 17 मार्च को मुंबई विद्यापीठ के कलिना परिसर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम ने पूरे भारत से युवा फिल्म निर्माताओं को एक साथ लाने का कार्य किया, जिससे उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने और फ़िल्म जगत के अग्रणी व्यक्तियों से सीखने का मंच मिला। इसी तरह मेडिविजन के माध्यम से मेडिकल छात्रों की 'आषाढ़ी आरोग्य सेवा' का आयोजन किया गया।

श्री शुक्ल ने कहा कि पश्चिम बंगाल महिलाओं के लिए क़ब्रगाह बनता जा रहा है। लगातार महिला उत्पीड़न और यौन शोषण की घटना से बंगाल शर्मसार है। जिस प्रदेश की मुख्यमंत्री स्वयं एक महिला है, वहां महिला सुरक्षा पर कई प्रश्न लग चुके है। ममता के संरक्षण में जेहादी मानसिकता वाले लोगों का मंसूबा सातवें आसमान पर है। ममता बनर्जी की पार्टी के कार्यालय हिंदू दलित महिलाओं के लिए शोषण के अड्डे बने। इस अमानवीय कुकृत्य और घोर पाप के विरुद्ध अभाविप ने सघन आंदोलन का सूत्रपात किया। इसी तरह केरल में सत्ताधारी दल सी.पी.एम. की छात्र इकाई एसएफआई के गुंडों द्वारा गत 18 फरवरी को वायनाड के वेटनरी एंड एनिमल साइंस यूनिवर्सिटी के द्वितीय वर्ष के छात्र जे. एस. सिद्धार्थन की पिटाई करके पूरे परिसर में घुमाया गया, जिसके बाद सिद्धार्थन का शव शौचालय में लटका हुआ मिला। एसएफआई की रक्त रंजित राजनीति से छात्रों को राहत और न्याय दिलाने की मांग को लेकर सम्पूर्ण देश में उग्र आंदोलन हेतु छात्र सड़क पर उतर गए। अभाविप द्वारा घटना की सीबीआई जांच और दोषियों पर कठोर कार्रवाई की मांग को लेकर देश भर में विराट आंदोलन हुआ।

उन्होंने बताया कि नीट यूजी पेपर लीक की खबर से परीक्षार्थी समुदाय से लेकर परिजन और शिक्षा अनुरागी पूरी तरह से उद्वेलित थे। एक बड़े समूह ने माना कि इस मामले में नौकरशाही की संदिग्ध भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। बाद में इस मामले को अभाविप ने उठाया और अविलंब नूतन सरकार से जांच करने की मांग की। अभाविप के विभिन आयामों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि विभिन्न आयामों द्वारा आयोजित कार्यशालाओं के माध्यम से न केवल विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान किया गया, बल्कि प्रतिभागियों को आत्मनिर्भर भारत की दिशा में नवाचार और आर्थिक प्रगति की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया गया।

अभाविप द्वारा छात्रसंघ चुनावों में ऐतिहासिक जीत की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि कर्नाटक दक्षिण प्रान्त में यूनिवर्सिटी कालेज हम्पनकट्टे में हुए छात्र परिषद चुनाव में अभाविप ने लगातार 16वें वर्ष में शानदार विजय हासिल की। सिक्किम विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद सहित कुल नौ प्रमुख पदों पर अभाविप के उम्मीदवारों की विजय, असम के सात विश्वविद्यालयों के हुए छात्र संघ चुनाव में 33 पदों पर मिली विजय ने उत्साह को बढ़ाने का काम किया। लद्दाख विश्वविद्यालय, उत्तराखंड में हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय, बीजीआर परिसर पौड़ी, स्वामी रामतीर्थ परिसर बादशाहीथौल, पंजाब विश्वविद्यालय सहित अन्य प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों में संपन्न हुए छात्रसंघ चुनाव में अभाविप ने शानदार विजय हासिल करके यह दर्शाया कि छात्र एवं राष्ट्र हित के लिए अभाविप हर समय तैयार है। महामंत्री प्रतिवेदन में श्री शुक्ल ने गत वर्ष के संगठनात्मक कार्यों, कार्यक्रमों, विभिन्न अभियानों और गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। ■

# सनातन संस्कृति में जाति-भेद जैसी कुरीतियों का कोई स्थान नहीं : गोविंद नायक

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अस्थायी रूप से बनाए गए अहिल्याबाई होल्कर नगर में आयोजित अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री गोविंद नायक ने कहा कि व्यक्ति निर्माण अभाविप कार्यपद्धति का आधार है। व्यक्ति निर्माण एक दिन का कार्य नहीं है और न ही यह कोई सरल काम है। इसके लिए हर दिन साधना करनी पड़ेगी। व्यक्ति निर्माण के लिए जिन छोटे-छोटे तत्वों पर विचार कर रहे हैं, वह 'पंच परिवर्तन' हैं। 'पंच परिवर्तन' का विषय सुनने और देखने में छोटा लग सकता है, लेकिन अगर इसको अपने जीवन में उतारेंगे तो यह व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र पुनर्निर्माण की यात्रा में सहायक सिद्ध होगा।

'पंच परिवर्तन' के विषय में उन्होंने बताया कि 'पंच परिवर्तन' का प्रथम तत्व सामाजिक समरसता है। इसके अंतर्गत देश में सभी नागरिकों के लिए सामाजिक समता एवं सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना पड़ेगा। जब परंपराओं के विषय में बात होती है तो यह समझना होगा कि देश की संस्कृति एक ही है और वह भारतीय संस्कृति या सनातन संस्कृति है। समय के साथ जो परंपराएं कालवाय हो गई हैं अर्थात जो समय के उपयुक्त नहीं हैं। उनको समाज से हटाना पड़ेगा। सनातन संस्कृति में कहा जाता है कि मनुष्य ही क्या पेड़ से लेकर चींटी तक सभी में ईश्वर का अंश है। सनातन संस्कृति में केवल जीवित वस्तु ही नहीं, बल्कि निर्जीव वस्तु में भी ईश्वर के अंश को देखा जाता है। पत्थर में भी अगर किसी का पैर लग जाए तो वह विष्णु-विष्णु कहता है। ऐसी संस्कृति में जाति-भेद जैसी कुरीतियों का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने कहा कि नारद, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य यह सभी वह महामुनि हैं, जिन्होंने समाज के अलग-अलग वर्गों में जन्म लिया और अपने परिश्रम के कारण समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। किसी भी शास्त्र में जाति का उल्लेख नहीं है। इसलिए इस विषय पर सभी को गहन चिन्तन करना ही होगा। वर्तमान समय में समाज के व्यक्ति समाज से अलग होने की बात कर रहे हैं। कभी-कभी उन्हें दोष देते हैं कि वह अलगाव पैदा कर रहे हैं। लेकिन कभी स्वयं के विषय में विचार करते है क्या ?

उन्होंने कहा कि वनवासी बंधुओं के विषय में कहा जाता है कि वह दूसरे मतावलंबन में चले गए। लेकिन क्या उनसे कभी संवाद करने के विषय में विचार किया जाता है? वास्तव में आज बिखराव की स्थिति में जितना दोष उनका है, उतना सभी का है। इस त्रुटि पर कार्य करते हुए उनसे भी संवाद स्थापित करना होगा। सामाजिक समरसता केवल एक रणनीति नहीं है, बल्कि जीवन उद्देश्य है। महाप्रभु जगन्नाथ जनजातियों के देवता थे, लेकिन आज वह समस्त जगत के देवता हैं। जब जगन्नाथ मंदिर में प्रसाद ग्रहण करते हैं तो दूर-दूर तक वहां जातिगत भेद नहीं दिखाई देता है। सामाजिक समरसता के लिए ऐसी समृद्ध सनातन परंपरा को आगे बढ़ाना ही होगा ।

## आचरण का विषय है पर्यावरण संरक्षण

'पंच परिवर्तन' के तहत दूसरी प्रतिबद्धता पर्यावरण संरक्षण है। सनातन संस्कृति में मानव और पर्यावरण को एक-दूसरे का पूरक के रूप में रेखांकित किया गया है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात यह धरती हमारी मां है, हम सभी इसके पुत्र हैं। इसे ध्यान में रखकर पर्यावरण संरक्षण के बिंदु पर कार्य करते हुए आगे बढ़ना होगा। विकास आवश्यक है, लेकिन विकास

और जीवनशैली का आधार प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए। वर्तमान उपभोगवादी संस्कृति को संस्कृति नहीं कहा जा सकता है, बल्कि यह विकृति है। असीमित उपभोग के कारण प्रकृति पर बोझ बढ़ गया है। वृक्ष लगाना, जल बचाना, प्लास्टिक घटाना जैसे विषय में क्या किया जा सकता है? अपने जीवन में युवाओं को इस विषय में भी सोचने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि प्रकृति के विषय में सनातन संस्कृति का विचार 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' है अर्थात हमारे शरीर में जो है, वह सारे ब्रह्मांड में है। इसे ध्यान में रखकर ही प्रकृति के साथ व्यवहार करना होगा। पर्यावरण संरक्षण भाषण का विषय नहीं, बल्कि आचरण में लाने का विषय है। पर्यावरण की रक्षा के लिए प्लास्टिक, पॉलीथीन के विषय में रीयूज़, रिड्यूस, रीसाइकिल एंड रिफ्यूज़ का फार्मुला अपनाना होगा।

## स्व के भाव का जागरण

उन्होंने कहा कि 'पंच परिवर्तन' के तहत तीसरी प्रतिबद्धता स्व का जागरण है। दैनिक जीवन में उपयोग में स्व का समावेश होना चाहिए। अपने घर, गांव, जिला, राज्य एवं देश में बनी वस्तु का उपयोग करके स्वदेशी को बढ़ावा देना होगा। साथ ही सभी को अपनी इच्छा से देशी एवं आवश्यकता में स्वदेशी और मजबूरी में विदेशी का उपयोग करने की मानसिकता को विकसित करना होगा। विदेशी वस्तुओं का उपयोग भी अपने शर्तों पर करना चाहिए। उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए स्व भाषा, स्व वेश, स्व भोजन, स्व भ्रमण को अपनाना होगा।

## पारिवारिक मूल्यों को बचाना आवश्यक

'पंच परिवर्तन' के चौथे बिंदू कुटुंब प्रबोधन यानी परिवार पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि पारिवारिक मूल्यों में लगातार ह्रास हो रहा है। परिवार भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का मजबूत आधार है, लेकिन यह दिन-प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। इसलिए हर स्थिति में अपने पारिवारिक मूल्यों को संरक्षित करना होगा। जब एक परिवार मजबूत होता है तो समाज दृढ़ होता है और समाज की दृढ़ता से राष्ट्र शक्तिशाली होता है। इसलिए परिवार की अनदेखी करना हानि है। आज परिवार के दायित्वों को लोग बंधन के रूप में लेते हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है।

उन्होंने पतंग और धागे से जुड़े एक उदाहरण को सामने रखते हुए कहा कि एक बार श्रीकृष्ण अपने साथ अर्जुन को पतंग उड़ाने के लिए ले गए। श्रीकृष्ण को अर्जुन ध्यान से पतंग उड़ाते देख रहे थे। थोड़ी देर बाद अर्जुन ने कहा कि माधव, इस धागे की वजह से पतंग अपनी आजादी से और ऊपर की ओर नहीं जा पा रही है, क्या हम इसे तोड़ दें? तब यह और ऊपर चली जाएगी? यह सुनकर श्रीकृष्ण ने धागा तोड़ दिया। तब पतंग थोड़ा सा और ऊपर गई और उसके बाद लहराकर नीचे आकर दूर अंजान स्थान पर जा गिरी। इसके बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि यही वह धागे होते हैं-जो हमें ऊंचाई पर रखते हैं। इन धागों के बिना एक बार तो हम ऊपर जाएंगे, लेकिन बाद में वही हश्र होगा, जो बिना धागे की पतंग का हुआ। अतः जीवन में यदि ऊंचाइयों पर बने रहना चाहते हो तो, कभी भी इन धागों से रिश्ता मत तोड़ना। धागे और पतंग जैसे जुड़ाव के सफल संतुलन से मिली हुई ऊंचाई को ही सफल जीवन कहते हैं। इसलिए परिवार बंधन नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन को सुचारू, व्यवस्थित, अनुशासित रखता है। परिवार संस्कार को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने की दिशा में सभी को पहल करनी चाहिए।

## स्वयं से हो परिवर्तन का आरंभ

उन्होंने कहा कि पंच परिवर्तन का अंतिम और महत्वपूर्ण भाग नागरिक कर्तव्य है। आज सभी कर्तव्य से पहले अधिकार को महत्व देते हैं। लेकिन इस विषय पर कार्य करने की आवश्यकता है कि युवा तरुणाई के मन-मस्तिष्क पर अधिकारों के लिए संघर्ष के साथ ही कर्तव्य के प्रति समर्पित रहने के बीज कैसे रोपित कर सकते हैं? अगर सभी कृत-संकल्पित होकर कर्तव्य का निर्वहन करते हैं तो अधिकार स्वतः प्राप्त होंगे। इसलिए पंच परिवर्तन का आरंभ भारत प्रथम भावना के साथ स्वयं करना होगा, तभी समाज में सकारात्मक परिवर्तन को गति मिलेगी। इसके लिए आवश्यक है कि राष्ट्रभक्ति सिर्फ हृदय में ही न रहे, बल्कि उसका प्रकटीकरण भी होना चाहिए। ■

# दीपेश नायर को मिला प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार

अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में महाराष्ट्र के ठाणे निवासी दीपेश नायर को प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दीपेश को यह पुरस्कार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदान किया। श्रवण बाधितों के लिए प्रशिक्षण और शैक्षणिक केंद्र (टीच) के सह-संस्थापक दीपेश नायर को यह पुरस्कार श्रवण दिव्यांगजनों में कौशल विकास एवं शिक्षा के माध्यम से जीवन उद्देश्य और उत्साह उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए दिया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें एक लाख रुपए की राशि, प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। पुरस्कार का उद्देश्य युवा सामाजिक उद्यमियों के काम को सामने लाना, उन्हें प्रोत्साहित करना और ऐसे सामाजिक उद्यमियों के प्रति युवाओं का आभार व्यक्त करना एवं युवा भारतीयों को सेवा कार्य के लिए प्रेरित करना है।

दीपेश ने अपने उद्बोधन में संस्था के आरंभिक अनुभव को साझा करते हुए बताया कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और सामाजिक दायित्व में समन्वय बनाते हुए उन्होंने इस मॉडल को बनाया है। इसके माध्यम से जिन भी बच्चों को प्रारंभिक दिनों में पढ़ाई में दिक्कतों का सामना करना पड़ता था, आज उन्हीं बच्चों को जब वह स्नातक की पढ़ाई पूरी करते देखते हैं तो बेहद खुशी होती है।

## पूर्व योजना-पूर्ण योजना के प्रतिपादक थे प्रा. यशवंत राव केलकर : देवदत्त जोशी

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार समारोह में युवा पुरस्कार की घोषणा अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री वीरेन्द्र सोलंकी ने की। युवा पुरस्कार की भूमिका को अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने रखते हुए कहा कि प्रा. यशवंत राव सामूहिकता में विश्वास रखते थे। उन्होंने संगठन और अध्यापन कार्य के बीच सामंजस्य को बनाए रखा। प्रा. केलकर जी पूर्व योजना-पूर्ण योजना के प्रतिपादक थे। ■

# विज्ञान और तकनीक के सापेक्ष स्वयं को तैयार करें युवा : योगी आदित्यनाथ

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समय की गति को भांपने और उसके अनुरूप खुद को तैयार करने की सीख देते हुए कहा कि सृष्टि के आरंभिक कालखंड से ज्ञानवान शक्तियां रिजर्व होकर कदम रखती रही हैं। इसके चलते कभी दधीचि को हड्डी दान करने के लिए मजबूर होना पड़ा तो कभी अलग-अलग तरीके से कीमत चुकानी पड़ी। आज कीमत चुकाने का नहीं, तकनीकी से जुड़कर कीमत लेने का समय है। यदि नई प्रौद्योगिकी के अनुरूप होकर इसका सदुपयोग सीख लें तो बहुत से हाथों को नया काम मिल सकता है। इसके लिए नैतिक पक्ष का सुरक्षात्मक ढांचा भी अवश्य होना चाहिए। ज्ञानवान और शीलवान बनने के साथ विज्ञान-तकनीकी के अनुकूल होकर समय के प्रवाह की गति को समझना अपरिहार्य है। यदि हम समय के प्रवाह की गति को समझने में चूक गए तो समय का यह प्रवाह दुर्गति कर देगा। समय के प्रवाह की दुर्गति से बचने के लिए जरूरी है कि हम विज्ञान और तकनीकी से भागें नहीं, बल्कि इसके सापेक्ष खुद को तैयार करें।

मुख्यमंत्री योगी गत 24 नवंबर को अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन के युवा पुरस्कार समारोह सत्र को संबोधित कर रहे थे। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित अधिवेशन में मुख्यमंत्री योगी ने अभाविप के ध्येय वाक्य ज्ञान, शील, एकता का उल्लेख करते हुए कहा कि ज्ञानवान बनने के लिए दुनिया में भारत से बड़ा आग्रही कोई और देश नहीं है। गीता में भी कहा गया है, 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' अर्थात ज्ञान के समान पवित्र करनेवाला, शुद्ध करनेवाला इस लोक में दूसरा कोई नहीं है। ज्ञानवान होने के लिए यहां ज्ञानवाहक ऋषि परंपरा का सम्मान रहा है।

अभाविप कार्यकर्ताओं को प्रेरित करते हुए मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि काल का प्रवाह किसी का इंतजार नहीं करता है। किसी की भी परवाह किए बगैर कालचक्र चलता रहता है। हम विज्ञान और तकनीकी से भागेंगे तो समय के साथ नहीं चल पाएंगे। मुख्यमंत्री ने नब्बे के दशक में कम्प्यूटरीकरण को लेकर हुए विरोध का उल्लेख करते हुए कहा कि तब कम्प्यूटरीकरण का विरोध हो रहा था और आज उससे भी आगे ई-ऑफिस का दौर आ गया। पूरी दुनिया एक स्मार्टफोन में आ चुकी है। समय के साथ तकनीकी बढ़ती गई। बिजली, टेलीफोन, टेलीविजन, हवाई जहाज, माइक्रोवेव, इंटरनेट, जीपीएस, सोशल मीडिया जैसी तकनीकी विरोध झेलकर आगे बढ़ती गई। इनमें से एक भी तकनीकी ऐसी नहीं है जो आज दैनिक जीवन का हिस्सा न हो।

## एकता से होगा चुनौतियों का सामना

मुख्यमंत्री योगी ने युवाओं को राष्ट्रधर्म सर्वोपरि का मंत्र देने के साथ इसके मार्ग में आने वाली बाधाओं

से निपटने का तरीका भी बताया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रधर्म की चुनौतियों का सामना पारस्परिक एकता से ही हो पाएगा। छात्रशक्ति ही राष्ट्र-शक्ति है। युवा कल का नहीं, आज का नागरिक है। राष्ट्रधर्म के पथ पर बढ़कर ही हम आजादी के शताब्दी वर्ष तक विकसित, आत्मनिर्भर और स्वावलंबी भारत के लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस परिकल्पना को साकार करने के लिए हमें मिलकर कार्य करना होगा।

## परिवर्तनकारी होती है युवा ऊर्जा

उन्होंने कहा कि युवा ऊर्जा सदैव परिवर्तनकारी होती है। दुनिया में जहां भी युवाओं की ऊर्जा का सम्मान हुआ, उसे सही दिशा मिली तो उसने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा दिया। प्रतिभाशाली युवा ऊर्जा उज्ज्वल भविष्य की गारंटी होती है। युवा ऊर्जा की दृष्टि से भारत दुनिया का सबसे सौभाग्यशाली देश है। भारत की 56 प्रतिशत जनसंख्या युवाओं की है। यह युवा ऊर्जा देश को नई दिशा दे रही है।

## अभाविप का कार्यकर्ता होना सौभाग्य का विषय

उन्होंने कहा कि अभाविप युवा ऊर्जा को सही दिशा देने वाला दुनिया का सबसे बड़ा युवा संगठन और एक सशक्त प्लेटफार्म है। अभाविप का कार्यकर्ता होना सौभाग्य की बात है और वह खुद को भी सौभाग्यशाली मानते हैं कि विद्यार्थी जीवन में वह अभाविप के कार्यकर्ता रहे हैं।

## मतांतरण पर लगाम लगाना आवश्यक

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मूक-बधिर बच्चों के राष्ट्रविरोधी धर्मांतरण से जुड़े एक मामले की चर्चा करते हुए बताया कि 2019 में एक मंदिर में संत की हत्या की साजिश के लिए छद्म नाम से जा रहे दो युवकों के पकड़े जाने के बाद कराई गई सख्त जांच में पता चला कि दोनों युवकों का संबंध दिल्ली के बाटला हाउस से जुड़े एक मत उपदेशक से था और तीन पीढ़ी पूर्व उनके पूर्वजों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। चूंकि 2008 में बाटला हाउस में एक आतंकी मुठभेड़ के दौरान दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा बलिदान हुए थे। इसलिए बाटला हाउस से जुड़े होने की बात पता चलते ही जांच और गहराई में ले जाई गई। जांच में पता चला कि वहां से एक बड़े गिरोह का संचालन किया जा रहा है, जो मूक-बधिर बच्चों को लक्ष्य बनाकर उनका मतांतरण कर रहा था। जांच के दौरान गुरुग्राम और कानपुर से जुड़े मामले सामने आए तो पता चला कि अवैध एवं सुनियोजित मतांतरण करने वाले इस गिरोह ने 500 परिवारों को अपने चपेट में लिया था। इस मामले में मत उपदेशक सहित सात लोगों को न्यायालय ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इस प्रकरण को बताने के साथ ही मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि आपके बीच कुछ ऐसे छिपे लोग हैं जो छद्म रूप से राष्ट्रविरोधी मतांतरण कर रहे हैं। यह सेवा की सौदेबाजी है। इस पर लगाम लगाना सिर्फ सरकार या किसी संगठन का नहीं, बल्कि प्रत्येक जागरूक नागरिक का दायित्व है। दीपेश नायर जैसे लोग श्रवणबाधित बच्चों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार कर ऐसा ही कार्य कर रहे हैं। ऐसे लोगों ने मतांतरण को बढ़ावा देने की साजिश को ब्रेकर दिया है। एक लक्ष्मण रेखा बनाई है।

## प्रतिभा जाति, मत, मजहब की मोहताज नहीं

दिव्यांगजन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चार प्रतिशत आरक्षण तथा दिव्यांगजन की 16 श्रेणियां बनाए जाने का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि आज दिव्यांगजन प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। प्रतिभा जाति, मत, मजहब की मोहताज नहीं होती है। ईश्वर एक कमी देते भी हैं तो किसी न किसी माध्यम से उसकी पूर्ति करते हैं। दिव्यांगजन की सेवा में सहभागी बनना एक प्रकार से ईश्वरी कार्य है।

युवा पुरस्कार समारोह की अध्यक्षता अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, आभार ज्ञापन स्वागत समिति के उपाध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त और संचालन सौरभ गौड़ ने किया। इस अवसर पर गोरखपुर के महापौर एवं स्वागत समिति के अध्यक्ष डा. मंगलेश श्रीवास्तव, राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी, राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री देवदत्त जोशी, स्वागत समिति के महामंत्री कामेश्वर नाथ सिंह, प्रांत अध्यक्ष डा. राकेश प्रताप सिंह, प्रांत मंत्री मयंक राय समेत कई जनप्रतिनिधि, गणमान्यजन और देशभर से आए अभाविप पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। ■

# राष्ट्रीय पदाधिकारी 2024-2025

| | | |
|---|---|---|
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | डा. राजशरण शाही | लखनऊ |
| राष्ट्रीय महामंत्री | डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी | इंदौर |
| राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | 1. प्रा. एम. नागलिंगम | कासरगोड |
| | 2. प्रा. मंदार भानुशे | मुंबई |
| | 3. डा. आशुतोष मंडावी | रायपुर |
| | 4. डा. सुरभिबेन दवे | जामनगर |
| राष्ट्रीय मंत्री | 1. श्री राहुल राणा | धर्मशाला |
| | 2. कु. शिवांगी खरवाल | दिल्ली |
| | 3. कु. शालिनी वर्मा | विदिशा |
| | 4. श्री अंकित शुक्ल | अयोध्या |
| | 5. श्री श्रवण बी. राज | भाग्यनगर |
| | 6. कु. क्षमा शर्मा | गाजियाबाद |
| | 7. श्री कमलेश सिंह | शिलांग |
| | 8. श्री आदित्य तकियार | चंडीगढ़ |
| राष्ट्रीय संगठनमंत्री | श्री आशीष चौहान | मुंबई |
| राष्ट्रीय सह-संगठनमंत्री | श्री गोविन्द नायक | कोलकाता |
| | श्री एस. बालकृष्ण | भाग्यनगर |
| | श्री देवदत्त जोशी | मुंबई |
| राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष | श्री गितेश सामंत | मुंबई |
| राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष | श्री दयानंद भाटिया | मुंबई |
| केन्द्रीय कार्यालय मंत्री | श्री सौरभ पाण्डेय | मुंबई |
| केन्द्रीय सचिवालय सचिव | श्री देवानंद त्यागी | मुंबई |

# “श्रवणबाधित बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समर्पित है जीवन”

**ट्रेनिंग एंड एजुकेशनल सेंटर फॉर हियरिंग इम्पेयर्ड’ (टीच) की स्थापना कर सैकड़ों श्रवणबाधित युवाओं के करियर को पंख देने वाले महाराष्ट्र निवासी दीपेश नायर को गोरखपुर में संपन्न अभाविप के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय छात्रशक्ति से हुई विशेष वार्ता में उन्होंने अपनी संस्था के कार्यों, उपलब्धियों एवं दिव्यांग छात्रों से जुड़ी आगामी योजनाओं की जानकारी दी। उनसे हुई वार्ता के मुख्य अंश-**

**दिव्यांग छात्रों के लिए कार्य करने की प्रेरणा कहां से मिली?**

सेवा भावना का संस्कार स्वयंसेवक परिवार में जन्म लेने के कारण बचपन से था। लेकिन शिक्षा और नौकरी में लगातार व्यस्तता के कारण कुछ विशेष कर नहीं पाया। संयोग से एक दिन एक फोन आया और कहा गया कि एक विद्यालय में स्वैच्छिक सेवा भाव से जरूरतमंद छात्रों के लिए शिक्षक की आवश्यकता है। विद्यालय में जाने पर वहां का दृश्य देखकर आश्चर्य से भर गया। देखा बच्चे तो हैं, लेकिन कोई शोर-गुल नहीं है। सब इशारों में बात कर रहे हैं। यह देखकर विचार करने लगा कि इन्हें पढ़ाएंगे कैसे? इनकी भाषा आती नहीं है, पढ़ाई की शुरुआत कैसे करें? स्वयंसेवक समन्वयक से कहा कि हमें संकेत भाषा पढ़ा दीजिए। इसके बाद मैं बच्चों को पढ़ाता और बच्चे हमें संकेत भाषा सिखाते। अपने बचपन के मित्र अमित के साथ नौकरी के साथ-साथ विद्यालय में अपना योगदान देने लगे।

**नौकरी छोड़कर बच्चों को पढ़ाने का विचार कैसे आया?**

बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते कई बार उनकी कहानियों में सुना कि किस प्रकार उन्हें अनदेखा किया जाता था। इसके बाद हमने वास्तविक स्थिति को जानने के लिए प्रोजेक्ट बनाया। मुंबई और इसके आसपास के जिले में जहां विशेष विद्यालय चलते थे, उसका अध्ययन करने पर पता चला कि इन बच्चों के लिए उच्च शिक्षा की व्यवस्था नहीं है। फिर पूर्णरूपेण नौकरी को छोड़कर 2016 में टीच संस्था बनाई और बधिर एवं कम सुनने वाले विद्यार्थियों के लिए समान शैक्षिक वातावरण निर्माण के कार्य में पूर्ण रूप से जुड़ गया। आज टीच का कार्य ठाणे, पुणे, दिल्ली सहित देश के विभिन्न हिस्सों में चल रहा है।

**कभी निराशा का भाव आया?**

नहीं, लेकिन इन बच्चों के लिए और क्या कर सकता हूं? कैसे अच्छा हो सकता है और कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यह प्रश्न विचार में आते हैं।

**कार्य करने की ऊर्जा कहां से प्राप्त होती है?**

ऊर्जा बच्चों से आती है। आप सोचिए, जो बच्चा बोल-सुन नहीं सकता, वह किसी को अपनी समस्या बता नहीं पाता है। यह संकट होने के बाद भी वह हमेशा हंसता रहता है। कक्षा में जाकर उनसे बात करता हूं, बस उसी से ऊर्जा प्राप्त होती है।

**टीच की उपलब्धियां क्या हैं?**

जिन बच्चों को लेकर कार्य आरम्भ किया था, वह सभी 23 बच्चे स्नातक की शिक्षा पूरी कर चुके हैं और उन्हें नौकरी भी मिल गई है। यह मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है क्योंकि यह बच्चे सभी के लिए रोल मॉडल बन गए हैं।

**प्रा. केलकर युवा पुरस्कार प्राप्त होने के बाद कैसा महसूस कर रहे हैं?**

युवा पुरस्कार से सम्मानित होना गर्व की बात है। यह केवल पुरस्कार नहीं, बल्कि जो कार्य किया, उसका प्रमाण है। अभाविप जैसे विशाल संगठन के मंच से सम्मानित होना एक सपने से कम नहीं है। ■

# डूसू चुनाव में अभाविप को मिले सर्वाधिक मत

## उपाध्यक्ष एवं सचिव पद पर अभाविप की बड़ी जीत

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव (डूसू) चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) समर्थित प्रत्याशियों को सर्वाधिक मत मिले हैं। डूसू चुनाव में अभाविप को उपाध्यक्ष एवं सचिव पद पर बड़ी जीत हासिल हुई। उपाध्यक्ष पद पर अभाविप प्रत्याशी भानु को 24,166 मत मिले, वहीं उसके प्रतिद्वंदी उम्मीदवार को महज 15,404 मत प्राप्त हुए। इसी तरह सचिव पद पर अभाविप की मित्रवंदा को 16,703 मत मिले एवं उन्होंने 1,467 मतों से निकटतम प्रत्याशी को मात दी।

डूसू चुनाव के लिए गत 27 सितंबर को मतदान हुआ था, जिसमें 1,45,893 मतदाताओं में से 51,300 छात्रों ने अपने मत का प्रयोग किया। चारों पदों को मिलाकर अभाविप समर्थित प्रत्याशियों को कुल 74,982 मत मिले। इस तरह से औसतन प्रत्येक पद पर 18,745 से अधिक मत मिले जो कि अन्य सभी छात्र संगठनों की तुलना में सर्वाधिक हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयीन छात्रसंघ चुनावों की बात करें तो अधिकांश महाविद्यालयों में अभाविप समर्थित प्रत्याशियों की जीत हुई एवं कई महाविद्यालयों में अभाविप समर्थित प्रत्याशियों ने सभी पदों पर एकतरफा जीत हासिल की।

डूसू चुनाव के परिणाम गत 28 सितंबर को घोषित होने थे, लेकिन दिल्ली विश्वविद्यालय और राजधानी के अन्य क्षेत्रों में पोस्टर और बैनर से गंदगी फैलने के मुद्दे को लेकर उच्च न्यायालय ने परिणामों की घोषणा पर रोक लगा दी थी। सफाई के बाद गत 25 नवंबर को मतगणना कराने का निर्णय लिया गया। मतगणना की निगरानी के लिए 14 सीसीटीवी कैमरे और 8 वीडियो कैमरे लगाए गए थे। मतगणना के लिए सुबह सात बजे सभी उम्मीदवारों की मौजूदगी में परीक्षा विभाग के स्ट्रांग रूम खोले गए। इसके बाद पांच सौ ईवीएम को कॉन्फ्रेंस सेंटर लाया गया। मतगणना के दौरान छात्र मार्ग, पटेल चेस्ट और रामजस कालेज की ओर बैरिकेडिंग कर दी गई और इन मार्गों पर वाहनों की आवाजाही बंद रही। केवल छात्रों को ही कक्षाओं में जाने के लिए अनुमति दी गई। चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद विजेताओं को रैली निकालने की अनुमति नहीं दी गई। डूसू चुनाव परिणाम के पश्चात अभाविप दिल्ली प्रांत मंत्री हर्ष अत्री ने विश्वविद्यालय के सभी छात्रों के प्रति आभार व्यक्त किया। ■

*(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)*

डूसू चुनाव में उपाध्यक्ष के रूप में सर्वाधिक मतों से निर्वाचित कर दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने, न केवल लोकतंत्र की मजबूती को प्रकट किया है, अपितु मुझे जिम्मेदारी से भर दिया है। अभाविप कार्यकर्ता के रूप में प्रत्येक छात्र समस्या के प्रति अपने दायित्वबोध के साथ समाधान के लिए प्रतिबद्ध हूं।

**भानु प्रताप,** नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ

डूसू चुनाव में छात्रों ने पुनः विश्वास दिखाते हुए अभाविप को चुना है। हमने दिल्ली विश्वविद्यालय को एक सुरक्षित कैंपस बनाने का वादा किया है। सभी छात्रों को विश्वास दिलाती हूं कि अभाविप नीत डूसू उनकी सभी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगी।

**मित्रविंदा कर्णवाल,** नवनिर्वाचित सचिव, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ

# परिवर्तन का सूर्योदय : युवा पदचाप

■ डा. अमित कुमार शर्मा

"हम युवा हैं हम करेंगे मुश्किलों से सामना"-गीत, आज के 'युवा भारत' को परिभाषित करता दिख रहा है। 1857 के स्वातंत्र्य समर का कालखंड, जिसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम-1857 के नाम से जानते हैं, वह युवा भारत के लिए अत्यंत प्रेरणादायी है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में युवा तरुणाई की जो अग्नि प्रज्ज्वलित हुई, उसमें रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, मंगल पांडे आदि ने निराश और हताश युवा भारत को पुनर्जाग्रत करने का कार्य किया। कालांतर में स्वामी विवेकानंद, महर्षि दयानंद, डा. हेडगेवार, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बटुकेश्वर दत्त, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, वीर सावरकर जैसे युवा जोश ने, न सिर्फ देश की नवीन धारा को प्रभावित किया, बल्कि पूरी दुनिया का ध्यान भी आकृष्ट किया। आज भारत जैसा युवा देश पूरी दुनिया में 'वसुधैव कुटुंबकम' के संदेश के साथ अपनी प्रतिभाओं से नित्य नूतन प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

## सनातन की ओर लौटते युवा

अपनी नवीन रचनात्मकता के साथ युवा सनातन धर्म के मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं। यही कारण है कि वैश्विक स्तर पर लोग विशेष कर युवा, भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर सनातन की ओर लौट रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी इंटरनेट मीडिया का सकारात्मक प्रयोग कर अति दुर्गम स्थानों स्थित धार्मिक स्थलों पर जाकर, उसका कंटेंट बनाकर सोशल मीडिया के माध्यम से भारत के राष्ट्रीय गौरव के भाव को जन-जन तक पहुंचाने में जुटी हुई है। हृदय में भारत भक्ति का भाव लेकर बड़ी संख्या में युवा सन्यासी की भांति कार्य कर रहे हैं। आज हजारों की संख्या में युवा पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनकर राष्ट्र और हिंदू संस्कृति के मूल्य की पुनर्स्थापना हेतु राष्ट्र सेवा में लगे हुए हैं। अपने स्थापना काल से ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) देश के विविध क्षेत्रों के साथ-साथ भारत के दुर्गम एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कार्य कर रही है। अभाविप कार्यकर्ता भारत को परम वैभव तक ले जाने के लिए लोगों में राष्ट्र भक्ति की लौ जागृत करते हुए मौन तपस्वी सेवा भाव से संगठन का कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीयता के भाव से ओत-प्रोत अपने युवा कार्यकर्ताओं के माध्यम से वैश्विक पहचान स्थापित करने वाला अभाविप दुनिया का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर अभाविप के कई युवा कार्यकर्ता पूर्णकालिक बनकर घर परिवार से दूर रहकर बिना किसी शोर-शराबे के सेवा कार्य करते हुए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए क्रांतिकारी योगदान दे रहे हैं। हजारों वर्षों से किए गए क्रूर विदेशी आक्रांताओं के हमले और उनकी हिंसक विचारधारा को अभाविप कार्यकर्ताओं ने मात्र अपने 76 वर्षों के सीमित कार्यकाल में शिक्षा, समाजसेवा और राष्ट्रीयता के भावबोध से भारतवासियों के मन में क्रांतिकारी परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा के प्रति सर्जक बना दिया।

## परंपराओं में गहरी रुचि

आज की युवा पीढ़ी अपने पारंपरिक मूल्यों, लोक मान्यताओं एवं संस्कृति के प्रति गहराई से जुड़ती जा रही है। छोटे शहरों से लेकर महानगरों में रहने वाली युवा पीढ़ी पश्चिम के व्यक्तिवाद और निजी स्वतंत्रता के स्थान पर पारंपरिक मूल्यों, लोक मान्यताओं, रीति-रिवाज एवं वेशभूषा से जुड़ाव रखना पसंद कर रही है। वर्तमान युवा पीढ़ी न केवल अपने मूल्यों के प्रति आकर्षित हो रही है, बल्कि अपने जीवन की

उथल-पुथल एवं अनिश्चितताओं से भरी जिंदगी का सामना करने में अधिक सशक्त एवं मजबूत हो रही है। सांस्कृतिक मूल्यों में गहरी रुचि रखने वाली युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन मूल्य के ढांचे से स्वयं को अभिव्यक्त कर मानवीय एवं पारिवारिक रिश्ते को भी महत्व दे रही है, जो माता-पिता की अपेक्षाओं को समझने और उन्हें आत्मसात कर पारिवारिक मूल्यों को स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। आज की युवा पीढ़ी अपनी लोक गीतों, धार्मिक अनुष्ठानों, रीति-रिवाजों के साथ न सिर्फ गहराई से जुड़ रही है, बल्कि उनका अनुपालन भी कर रही है। यही कारण है कि गांव से लेकर महानगर तक की युवा पीढ़ी में अपनी परंपराओं को लेकर रुचि बढ़ रही है।

## लोकतंत्र में दृढ़ विश्वास

वर्षों से चली आ रही सत्ता की मिली-भगत और लूट को जड़ से समूल नष्ट करने के लिए भारत की युवा पीढ़ी ने परिवर्तन की नई राह पकड़ी और 2014 के लोकसभा चुनाव में युवाओं ने पहली बार करोड़ की संख्या में अपने मताधिकार का प्रयोग कर लोकतंत्र को सशक्त किया। राष्ट्र के प्रति नवीन एवं साहसी प्रयास कर युवाओं ने वर्षों से चली आ रही वाम विचारधारा एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध कार्य करने वाले जेहादी एवं वाम गुटों को उखाड़ फेंका। बड़ी संख्या में युवाओं ने अथक प्रयास कर राष्ट्रीयता के भाव को विकसित करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को जड़ों से जोड़ने का साहसिक प्रयास करते हुए युवा भारत का मार्ग प्रशस्त किया। इसी तरह 2019 एवं 2024 के चुनाव में भी युवाओं ने मताधिकार का प्रयोग कर युवा भारत को शक्ति प्रदान की।

## ऊर्जा से ओत-प्रोत युवा

'चरैवेति-चरैवेति, यही तो मंत्र है अपना' के भाव से अपनी ऊर्जा को सही दिशा देकर आज की युवा पीढ़ी अपना प्रकाश स्वयं बन रहा है। एक तरफ जहां तकनीकी क्षेत्र में पूरी दुनिया में अपना परचम लहराकर भारत की युवा पीढ़ी शिक्षा और तकनीकी में तेजी से आगे बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर अपने सांस्कृतिक मूल्य की ओर भी लौट रही है। आज की युवा पीढ़ी तकनीकी और भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़कर नए दृष्टिकोण के साथ भारतीय संस्कृति से विश्व समुदाय को परिचित करा रही है। अपनी समृद्ध संस्कृति, ज्ञान-परंपरा और तकनीक के बीच सामंजस्य स्थापित कर भारतीय युवा दुनिया भर के देशों एवं संस्थानों में सफलता की नई गाथा भी लिख रहे हैं।

## आकाश भर उड़ान

मंगल ग्रह की सफलता के बाद भारत की युवा पीढ़ी एक तरफ जहां नए ग्रहों की खोज में उड़ रही है, वहीं दूसरी ओर दुनिया भर की बड़ी कंपनियों के साथ ही नासा, इसरो जैसे वैज्ञानिक संस्थाओं का नेतृत्व भी कर रही है। शीर्ष पर बैठी युवा पीढ़ी 'नमः गणेशाय' कहकर भारत के सनातन मूल्य के साथ बौद्धिक भावना को बढ़ा रही है। नई पीढ़ी के पास तकनीक के साथ-साथ अपने सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर होने के कारण चुनौतियां से लड़ना और उसे निखर कर बाहर आना बखूबी आ रहा है। यही कारण है कि आज की युवा पीढ़ी अपनी ऊर्जा से देश की चुनौतियों जैसे गरीबी, निरक्षरता, जातीय भेदभाव से लड़कर आगे बढ़ती जा रही है, साथ ही राष्ट्र की अखंडता एवं एकात्मकता को दृढ़ करने के लिए अत्यधिक गति एवं ऊर्जा के साथ लगी हुई है। विश्व में भारत की बदलती भूमिका, भारत की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक मूल्यों की स्थापना का ही प्रारब्ध है। ■

**आज की युवा पीढ़ी अपने पारंपरिक मूल्यों, लोक मान्यताओं एवं संस्कृति के प्रति गहराई से जुड़ती जा रही है। छोटे शहरों से लेकर महानगरों में रहने वाली युवा पीढ़ी पश्चिम के व्यक्तिवाद और निजी स्वतंत्रता के स्थान पर पारंपरिक मूल्यों, लोक मान्यताओं, रीति-रिवाज एवं वेशभूषा से जुड़ाव रखना पसंद कर रही है।**

# संगठन शिल्पी : प्रा.यशवंत राव केलकर

■ प्रा. नागेश ठाकुर

प्राध्यापक यशवंत राव केलकर एक ऐसे महान व्यक्तित्व थे, जिन्हें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के शिल्पकार के रूप में जाना जाता है। उनका जीवन राष्ट्र और समाज की सेवा के लिए समर्पित था। भारतीय समाज और संस्कृति की गहराई से समझ रखने वाले प्रा. केलकर ने अभाविप को एक विशिष्ट और अनूठे छात्र संगठन के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हर राष्ट्र की अपनी "चिति" होती है, जो उसकी संस्कृति और परंपराओं को परिभाषित करती है। भारत एक सांस्कृतिक जीवंत इकाई के रूप में पश्चिमी राष्ट्र की अवधारणा से भिन्न है। कहावत हैः

*"यूनान, मिस्र, रोमां मिट गए जहां से*
*बात कुछ है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।"*

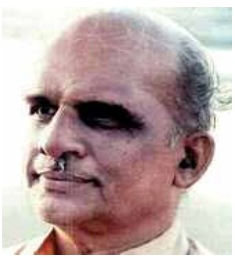

यूनान, मिस्र और रोम जैसे स्थानों से वहां की संस्कृति, संस्कार और परंपराएं विलुप्त हो गईं, जबकि भारत ने विदेशी शासकों की राजनीतिक गुलामी के लंबे कालखंड के बावजूद अपनी मूल सनातन संस्कृति और धर्म को जीवित रखा। इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण में डा. केशव बलिराम हेडगेवार का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने समाज का अध्ययन करते हुए उद्घोषणा की कि भारत हिंदू राष्ट्र है। भारत का स्वर्णिम इतिहास और समाज की मूल सनातन संस्कृति तब तक पुनर्जीवित नहीं हो सकती, जब तक समाज को संगठित और जागृत न किया जाए। इसी उद्देश्य से 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई, जिसका लक्ष्य था भारत को परम वैभव तक ले जाना। डा. हेडगेवार ने निष्कर्ष निकाला कि हिंदू समाज असंगठित और राष्ट्रीय चरित्र की कमी से जूझ रहा है। इसे दूर करने के लिए एक ऐसी पद्धति बनाई गई, जिसमें संस्कारित, राष्ट्रभक्त और राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित संगठित शक्ति तैयार हो सके। यह पद्धति संघ की प्रतिदिन एक घंटे की शाखा के माध्यम से विकसित हुई। इसी शाखा, जो चरित्र निर्माण और व्यक्ति निर्माण का आधार बनी, से तैयार हुए एक अद्वितीय स्वयंसेवक थे प्रा. यशवंत राव केलकर। उनके जीवन और कार्यों ने अभाविप को संगठनात्मक रूप से सशक्त और प्रभावी बनाया। उनका जन्म 25 अप्रैल 1925 को महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के पंढरपुर गांव में हुआ। 1945 में वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। 1952 में संघ प्रचारक जीवन के दायित्व से मुक्त होकर उन्होंने एक नए क्षेत्र में कदम रखा। 1955 में उन्होंने मुंबई के एक महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला और 1956 में नेशनल कालेज (मुंबई) में प्राध्यापक के तौर पर जुड़ गए। यहीं से वह 1985 में सेवानिवृत्त हुए।

1959 में संघ के निर्देशानुसार उन्हें अभाविप का दायित्व सौंपा गया। इसके बाद 1959 से 1985 तक उन्होंने परिषद में सक्रिय रहते हुए मार्गदर्शन किया। 1967-68 में एक वर्ष के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे। उसी वर्ष, उन्होंने "अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन(SEIL)" प्रकल्प की स्थापना की और इसके संस्थापक अध्यक्ष बने। वह अभाविप की अनूठी कार्य पद्धति के जनक थे। कार्यकर्ताओं के विकास और निर्माण की जो प्रक्रिया उन्होंने बनाई, उसे अपने जीवन में आत्मसात कर कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व को प्रभावित किया। आज भी अभाविप उनकी स्थापित कार्यपद्धति और कार्यकर्ता निर्माण की प्रक्रिया का अनुसरण कर रहा है। यही कारण है कि अभाविप एक विशिष्ट संगठन के रूप में स्थापित हुआ।

प्रा. यशवंत राव का जीवन एक और महत्वपूर्ण गुण से प्रेरित था-कार्यकर्ताओं की संभाल। संगठन में कार्यकर्ता के विकास और कार्य पद्धति की स्थापना के बाद भी कई बार परिस्थितियां ऐसी होती हैं, जब कार्यकर्ता निष्क्रिय हो जाते हैं या आपसी मतभेदों से टूट जाते हैं। ऐसे समय में

संगठन के प्रमुख कार्यकर्ताओं को उनकी संभाल करनी पड़ती है। प्रा. यशवंत राव केवल कार्यकर्ता के नाते नहीं, बल्कि "व्यक्ति" के रूप में उनकी संभाल करते थे। चाहे कोई कार्यकर्ता सक्रिय न हो, फिर भी वह उसे निस्वार्थ भाव से सहारा देते।

वह हमेशा कहते थे, "मनुष्य सर्वप्रथम है, कार्यकर्ता बाद में। जैसा है, वैसा लो और जैसा चाहते हो, वैसा बनाओ।" वह व्यक्ति की उपयुक्तता पर ध्यान न देकर उसे मनुष्यता के आधार पर संभालते थे और उसे मित्रवत स्नेह प्रदान करते थे। उनके इस निस्वार्थ और आत्मीय दृष्टिकोण ने कार्यकर्ताओं को दीर्घकाल तक संगठन से जुड़े रहने और प्रेरित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। वह हमेशा यही कहते थे कि "अच्छाई पर श्रद्धा" व्यक्ति को पूरी तरह बदलने की क्षमता रखती है। उन्होंने इसी श्रद्धा से हजारों कार्यकर्ताओं को संभाला। उनके इस गुण ने कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया और उन्हें जीवन में सही दिशा दिखाई। उनके संपर्क मात्र से कार्यकर्ता अपने जीवन की समस्याओं-चाहे वह दुख, तनाव, अपयश, संगठन में उपेक्षा, नौकरी, व्यवसाय या परिवार की दिक्कत-इन सबसे मुक्त होकर संगठन कार्य में सक्रिय हो जाते थे। हर कार्यकर्ता को प्रा. केलकर अपने सच्चे मित्र लगते थे।

## समरसता

अभाविप कार्यकर्ता सामाजिक समरसता के विषय में विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को जागरूक करते रहते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग प्रा. केलकर से जुड़ा हुआ है। महाविद्यालय में पढ़ने वाला एक विद्यार्थी एक शाम उनके घर जाने का निर्णय लेता है। यह विद्यार्थी कभी-कभी विद्यार्थी परिषद के कार्यक्रमों में हिस्सा लेता था और जानता था कि प्रा. केलकर इस संगठन के वरिष्ठ सदस्य हैं। विद्यार्थी सोच रहा था कि वहां उसका स्वागत कैसे होगा। उसके पिताजी, जो डा. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को हार पहनाते थे, ने उससे कहा था, "यदि अपना अपमान कराना हो तो उस केलकर के घर जाओ।" गली के मित्रों ने भी उसे डराने की कोशिश की और कहा, "अभाविप संघ वालों के घर जाओगे तो वह अलग रखे प्याले में चाय देंगे, हाथ में नहीं देंगे।"

इन बातों से प्रभावित होकर विद्यार्थी ने मन ही मन ठान लिया कि वह जरूर जाएगा और अभाविप वालों के सच को सबके सामने लाएगा। उसने सोचा, "जो लोग अपने कार्यक्रमों और अभ्यास वर्गों में समता की लंबी-चौड़ी बातें करते हैं, आज देखूंगा कि वह अपने घर में कैसे व्यवहार करते हैं।" लगभग साढ़े पांच बजे वह पैदल चलता हुआ शिवाजी पार्क स्थित प्रा. केलकर के घर पहुंचा। उसने दरवाजे की घंटी बजाई। प्रा. केलकर ने दरवाजा खोला और बड़ी प्रसन्नता से उसे अंदर बुलाया। दोनों एक बड़ी मेज के दोनों ओर बैठ गए। प्रा. केलकर सहज ढंग से बातचीत कर रहे थे।

अचानक उन्होंने कहा, "अरे, इतनी दूर से आए हो, प्यास लगी होगी। जाओ, रसोई में चबूतरे पर पानी के घड़े रखे हैं, उनमें से पानी लो और मेरे लिए भी लेते आना।" यह सुनकर विद्यार्थी चौंक गया और बोला, "मैं? मैं आपकी रसोई से पानी लाऊं?" तब प्रा. केलकर सहजता से मुस्कुराते हुए बोले, "हां, हां, सामने ही है, तुरंत मिल जाएगा।" यह सुनकर विद्यार्थी अवाक रह गया। उसे खेद होने लगा कि उसने ऐसे महान व्यक्ति की परीक्षा लेने की कोशिश की। उसी क्षण से प्रा. केलकर और उस विद्यार्थी के बीच आजीवन अटूट रिश्ता बन गया। इस घटना ने प्रा. केलकर के समता और सरलता के सिद्धांत को प्रमाणित किया।

## समय पालन

एक बार कार्यकर्ताओं के अभ्यास वर्ग में सत्र समाप्त होने के बाद चाय की व्यवस्था की गई। चाय बनते-बनते थोड़ी देर हो गई, लेकिन प्रा. केलकर कार्यकर्ताओं के साथ खड़े होकर चाय पीने लगे। तभी उनका ध्यान घड़ी की ओर गया और उन्होंने देखा कि अगले सत्र का समय हो रहा है। बिना किसी को कुछ कहे, उन्होंने अपनी चाय की प्याली में ठंडा पानी मिलाया और एक ही घूंट में चाय पीकर तेजी से सत्र स्थल की ओर बढ़ गए। उन्हें देखकर अन्य कार्यकर्ता भी समय का महत्व समझते हुए सत्र की ओर चल पड़े। बिना कुछ कहे, प्रा. केलकर ने समय पालन का महत्व अपने आचरण से सिखा दिया।

एक अन्य प्रसंग में प्रा. केलकर को पता चला कि एक छात्र कार्यकर्ता, जो पढ़ाई में अत्यंत मेधावी था, आर्थिक तंगी के कारण परीक्षा का फॉर्म नहीं भर पा रहा

है। उन्होंने तुरंत उसकी आर्थिक मदद की और उसे आगे पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कई अन्य विद्यार्थियों की भी आर्थिक मदद करके उनकी प्रतिभा को निखारने का कार्य किया। ऐसा ही एक विद्यार्थी, जिसने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अच्छी नौकरी प्राप्त की, एक दिन प्रा. केलकर को वह मदद लौटाने के लिए उनके पास आया। इस पर प्रा. केलकर ने कहा, "मैंने तुम्हारी मदद इसलिए नहीं की थी कि तुम मुझे पैसे लौटाओ। तुम्हारे आसपास कई प्रतिभाशाली विद्यार्थी होंगे, जो आर्थिक तंगी के कारण अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पा रहे होंगे। उनकी मदद करो।" यह घटना उनके सामाजिक संवेदना के उत्कृष्ट उदाहरण को दर्शाती है।

कार्यकर्ताओं के आग्रह पर, षष्टिपूर्ति कार्यक्रम के अवसर पर, प्रा. केलकर ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया, "हमारा कार्य पूरे भारत और भारत के बाहर भी चल रहा है। इस कार्य के कुछ मूल आधार हैं-निस्वार्थ भाव, परिश्रमशीलता और सक्रियता। इन आधारों के अतिरिक्त दो विशेषताएं ऐसी हैं, जिनके कारण हम प्रमाणिकता और जमीन से जुड़े रहकर अपना कार्य प्रभावी रूप से कर पाए हैं।

पहली विशेषता यह है कि किसी भी समाज में अच्छा कार्य करने वाली संस्थाओं को सामूहिकता के आधार पर चलाना होता है। जब किसी एक व्यक्ति के महत्व को विशेष मान लिया जाता है, तो संस्था का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। इतिहास ने बार-बार हमें यही सिखाया है। इसलिए हमारे कार्य की सफलता का रहस्य सामूहिकता में है, न कि किसी एक व्यक्ति में। दूसरी विशेषता यह है कि हम सभी अपूर्णांक हैं और मिलकर पूर्णांक बनते हैं। हर अपूर्णांक का समान महत्व है- कोई अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता, कोई कम महत्वपूर्ण नहीं होता। पूर्णांक तब ही बनता है, जब सभी अपूर्णांक मिलकर साथ काम करते हैं।"

प्रा. केलकर ने अपने आचरण और विचारों से यह स्पष्ट किया कि संस्था और समाज में सामूहिकता और सहयोग ही सफलता का आधार हैं। उनके यह मूल्य आज भी कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। स्वर्गीय प्रा.यशवंत राव केलकर को हमसे विदा लिए हुए आज कई वर्ष हो गए हैं। उनके साथ काम करने वाले कई कार्यकर्ता अब हमारे बीच नहीं हैं या बहुत कम संख्या में हैं। फिर भी, जैसे सूर्यास्त के बाद दीपक अपनी क्षमता के अनुसार प्रकाश देता रहता है, वैसे ही आज के प्रमुख कार्यकर्ताओं को दीप बनने का प्रयास करना होगा।

प्रा. केलकर का आभामंडल आज भी हमारे प्रयासों में मार्गदर्शन करता है। भारत की आध्यात्मिक संस्कृति हमें यह सिखाती है कि "Every thing in this universe is the manifestation of a single entity"-इस ब्रह्मांड में सब एक ही तत्व के विभिन्न रूप हैं। हम पूरे विश्व को अपना परिवार मानते हैं और मानते हैं कि विश्व का कल्याण केवल भारत की संस्कृति और परंपराओं के आधार पर ही संभव है। इसलिए सभी को दृढ़ संकल्प लेना चाहिए कि डा. हेडगेवार जी और प्रा. यशवंत राव केलकर जैसे महान शिल्पकारों के दिखाए हुए मार्ग पर चलें और निरंतर आगे बढ़ते रहें। यही संदेश है-"चरैवेति चरैवेति"। ■

सुधी पाठकों!

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' दिसंबर 2024 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

# आहिल्याबाई होल्कर की स्मृति में शक्ति संचयन छात्रा सम्मेलन

पुण्यश्लोक आहिल्याबाई होल्कर के त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर अभाविप ब्रज प्रांत द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की पवित्र भूमि मथुरा में 'शक्ति संचयन' छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की सदस्य डा. सुषमा सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में हिस्सा लिया। अपने सम्बोधन में डा. सुषमा सिंह ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है, जहां नारी पूजनीय है। आज हम जब विकसित भारत की बात कर रहे हैं, तो उसमें महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चत करनी होगी। महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हमें कौशल के साथ व्यवहार और संस्कार भी विकसित करना होगा। जब इन सभी घटकों पर एक साथ कार्य करेंगे, तभी समाज में सकारात्मक परिवर्तन होगा।

शक्ति संचयन छात्रा सम्मेलन की मुख्य वक्ता एवं दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ की निवर्तमान सचिव अपराजिता ने कहा कि पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर के त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर अभाविप द्वारा आयोजित की गई मानवंदना यात्रा इस बात का प्रतीक है कि आज जब हम विकसित भारत में महिला सहभागिता की बात कर रहे हैं, तो अपनी महान वीरांगनाओं के योगदान को भी नहीं भूलें हैं। हम जानते हैं कि अहिल्याबाई होल्कर ने भारतीय संस्कृति को संजोने में महती भूमिका का निर्वहन किया। रानी पद्मिनी, रानी लक्ष्मीबाई, झलकारीबाई, रानी दुर्गावती सहित अनेक महान वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की चिंता किए बिना देश एवं समाज के लिए कार्य करते हुए सकारात्मक एवं प्रभावशाली संदेश दिया।

कार्यक्रम अध्यक्ष डा. लक्ष्मी गौतम ने कहा कि महिला सशक्तिकरण समाज के समग्र विकास के लिए अहम है। आज महिलाएं व्यवसायिक जगत, पुलिस, नौसेना, सेना जैसी सुरक्षा सेवाओं के साथ ही प्रौद्योगिकी क्षेत्र में काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने, अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने और अपने समुदायों के समग्र आर्थिक विकास में योगदान करने में सक्षम बनाता है। सम्मेलन में प्रांत संगठन मंत्री अंशुल श्रीवास्तव, प्रांत मंत्री अंकित पटेल सहित सभी जिलों, महानगरों एवं विभागों के संगठन मंत्री उपस्थित रहे। ■

*(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)*

# Universal Declaration of Human Rights and Constitution of India

■ Dr. Pradeep kumar

The universal Declaration of Human Rights, ratified by the UN General Assembly in 1948, encompassed rights that India closely aligns with. India's fundamental right to equality bears a striking resemblance to Articles 1 and 2 of the Declaration. Article 23 of the UDHR also bears close self-similarity with India's constitutional commitment to 'the right against exploitation' Under these articles, Aliens and non-citizens shall equally be entitled to social justice and hence shall enjoy freedom of speech and expression, the right to practice any profession, cultivate any occupation, trade or business and to education. This article attempts to understand the link between the Indian Constitution and the UDHR in the context of the global order that came into being after the Second World War.

**THE UNIVERSAL DECLARATION OF HUMAN RIGHTS (UDHR) : A BEACON OF HUMAN RIGHTS**

The Indian constitution came into power on January 26, 1950 and is amongst the longest available written constitutions. The preamble of the Indian National Constitution encapsulates the core sentiment of the nation by stating that 'what is best for its people', India, as a nation has and will always strive to protect the future of its citizens by ensuring that they cultivate an appreciation for the core values of the country, sovereignty, socialism, secularism, democracy and the unity of India. The goals of justice, liberty, equality, and fraternity are central to the Constitution and promote in the Indian state the dignity of its citizens. It serves to indicate that these values are of absolute importance to India and need to be cherished. The Constitution is laid out in a manner that anyone can read and understand and therefore all 25 parts are grouped into four broad sections.

**THE INDIAN CONSTITUTION : EMBODIMENT OF UDHR PRINCIPLES**

Yet, when the Indian Constituent Assembly cast itself into the task of framing a constitution in 1946, it was by then keenly aware of the general human rights movement. The UDHR of 1948 also established some finalizing standards for the Constitution in terms of ensuring its own provisions being in harmony with recognized human rights norms.

**KEY FEATURES OF THE UDHR**

**Equal and Non-Discriminatory :** All men are born free and equal in dignity and rights in terms of Articles 1 and 2 of the Universal Declaration of Human Rights, with no distinctions based on race, color, sex or any other status.

**Civil and Political Rights :** Recognized in the UDHR among other fundamental freedoms, the right to life, liberty and security (Article 3), freedom from torture (Article 5) and fair trial rights (Article 10) are included.

**Economic, Social and Cultural Rights :** Rights such as 23 (the right to work), 25 (the right to an adequate standard of living) and 26 (the right to education) emphasize economic and social welfare.

**The Right to Participation and Democracy :** The UDHR embraces democratic principles like the right to take part in government (Article 21) and freedom of thought and expression (Article 19).

**FUNDAMENTAL RIGHTS AND THE UDHR**

Part-III of the Constitution of India provides for Fundamental Rights closely resembling rights in the UDHR :

**Right to Equality (Articles 14-18) :** Inspired by Articles 1 and 2 of the UDHR, it provides for equality before the law and forbids discrimination on the ground of religion, race, caste, sex or place of birth.

**Right to Freedom (Articles 19-22) :** Freedom of speech, assembly, association, movement, residence, and profession are guaranteed under it reflecting Articles 19 and 20 of the UDHR.

**Right against Exploitation (Articles 23-24) :** Human trafficking, forced labor and child labor are prohibited in these rights and aligned with Article 4 of the UDHR.

**Right to Freedom of Religion (Articles 25-28) :** These articles provide for the freedom of religion, corresponding to Article 18 of the UDHR.

**Cultural and Educational Rights (Articles 29-30) :** Rights guarantee minorities to conserve their culture, language, and education (inspired from Articles 26 and 27 of the UDHR).

**Right to Constitutional Remedies :** Dr. B. R. Ambedkar called this the "heart and soul" of the Constitution. It provides for the enforcement of Fundamental Rights by the courts, which echoes this Article 8 of the UDHR

## DIRECTIVE PRINCIPLES OF STATE POLICY AND SOCIO-ECONOMIC RIGHTS

The Directive Principles of State Policy as mentioned under Part IV reflect some of the socio-economic rights described in the Universal Declaration of Human Rights (UDHR). Such are the principles that the State must follow in rendering its duties towards ensuring social welfare, equal economic life and justice:

**Right to Work and Education (Article 41) :** This primarily derives from articles 23 and 26 of the UDHR.

**Living Wage and Decent Standard of Life (Article 43) :** This Article seeks to encapsulate the essence of Article 25 of the UDHR.

**Promotion of Education and Economic Interests of Weaker Sections (Article 46) :** This again reflects the human dignity aspect that is stressed in the UDHR and the issue of what can reduce or even eliminate inequality.

## FUNDAMENTAL DUTIES AND THE UDHR

The Fundamental Duties (Article 51A) were added by the 42nd Amendment in 1976 and are a reflection of the UDHR's emphasis on civic responsibility. Thus, these duties cultivate respect for the Constitution, promote harmony and safeguard public property-calling up the responsible citizen's duties towards the UDHR.

## INDIA'S COMMITMENT TO INTERNATIONAL OBLIGATIONS UNDER THE UN

Originally, India was one of the 50 founding countries that signed the United Nations Charter in 1945 and it was a critical actor for the drafting of the UDHR. The commitment is testified to the fact that it has ratified a number of international treaties and conventions, all of which reflect its devotion to the principles of the UN.

## INDIA'S ROLE IN PROMOTING HUMAN RIGHTS GLOBALLY

India has an outside commitment to human rights. As a member of the United Nations Human Rights Council (UNHRC), India takes part in global debates about human rights and supports initiatives for development, peace, and justice. India has also contributed to the UN Peacekeeping Operations, which show its allegiance to maintaining international peace and security.

## CHALLENGES AND THE PATH FORWARD

On the one hand, the Indian Constitution and its international obligations show a clear reflection of high ideals on human rights and on the other hand, continue to face some real challenges-poverty, inequality and discrimination. These require a combination of new ways of aligning with international standards, effective implementation of laws, and continued commitment towards social justice to counter all sorts of injustice.

## CONCLUSION

Moreover, it reflects India ratifying several important international treaties and participating in the largest world organization, the United Nations. By weaving in these principles into domestic law and policy, India reaffirms its role as a democratic nation dedicated to promoting dignity, equality, and justice for all. As India progresses in engaging with global human rights mechanisms, it strengthens the fundamental ideals of the UDHR and upholds those principles "liberty, justice, and equality" attractive and vibrant both within the national and international contexts. ■

# Digital Arrest: The Emerging Face of Cybercrime and Preventive Measures

■ Yash Kumar Singh

In the ever-evolving digital age, where convenience and connectivity shape our daily lives, an alarming new wave of cybercrime has emerged: Digital Arrest. This sophisticated scheme sees criminals impersonating government officials to extort money, exploiting technological advancements and the trust of unsuspecting citizens. Beyond personal losses, these scams threaten national cybersecurity and demand urgent attention.

Digital Arrest scams are chillingly deceptive. Cybercriminals fabricate identities, posing as police officers, Enforcement Directorate (ED) officials, or Central Bureau of Investigation (CBI) agents. Armed with counterfeit documents, deepfake videos, and fake websites, they intimidate victims with fabricated allegations, such as money laundering or illegal activities. Video calls, fraudulent social media profiles, and phishing emails are just a few of the tools used to carry out these crimes. By creating an aura of authority and urgency, these criminals coerce victims into revealing sensitive information or transferring money.

Reports from the National Cyber Crime Reporting Portal highlight a sharp 25% rise in Digital Arrest scams in 2024 compared to the previous year. A notable case involved a ₹159 crore scam, where fraudsters used fake stock market investments and Digital Arrest schemes to dupe citizens. These incidents reflect the increasing sophistication and scale of such operations.

A case in point is the story of Ranjana, a 36-year-old woman from Noida, who fell prey to a Digital Arrest scam in August 2024. Posing as DHL Courier

Service representatives, the criminals falsely accused her of being linked to prohibited substances in a parcel. Redirecting her call to imposters posing as Crime Branch officials, they extracted personal details and coerced her into transferring ₹9.7 lakhs under the guise of helping her avoid arrest. After two harrowing days of virtual intimidation, she managed to lodge a complaint with cybercrime police, but the psychological and financial damage had already been done.

Awareness and proactive measures are key to staying ahead of cybercriminals. Here's how citizens can protect themselves :

- Verify calls or emails claiming to be from government agencies. Pay attention to video quality and language tone in calls. Authentic officials do not use personal email domains.
- Never share Aadhaar numbers, PAN details, bank information or OTPs with unknown entities. Use secure payment platforms and avoid clicking on dubious links.
- Create strong, unique passwords for online accounts, enable two-factor authentication, and ensure antivirus software is up-to-date.
- Stay calm and refrain from acting impulsively. Report suspicious activity to local authorities or the National Cyber Crime Reporting Portal.
- Educate family and friends about such scams, and participate in cybersecurity workshops to stay informed.

The government and law enforcement agencies are actively working to address this growing menace. Initiatives include the 1930 Cyber Helpline for immediate assistance and the establishment of the Indian Cyber Crime Coordination Centre (I4C) to enhance coordination between state cyber agencies. Technological advancements, such as AI-based surveillance systems, are being developed to counter these crimes.

Moreover, international collaborations are strengthening efforts to track global cybercrime syndicates, with new protocols focusing on cryptocurrency transaction monitoring. Nationwide awareness campaigns and legal crackdowns on shell companies are further steps toward safeguarding citizens.

Digital Arrest scams highlight the darker side of technological progress, underscoring the need for vigilance and collaborative efforts. While technological tools empower cybercriminals, they can also be used to outsmart them. By staying informed, adopting preventive measures and supporting government initiatives, citizens can play a crucial role in combating these crimes.

**DIGITAL ARREST SCAMS HIGHLIGHT THE DARKER SIDE OF TECHNOLOGICAL PROGRESS, UNDERSCORING THE NEED FOR VIGILANCE AND COLLABORATIVE EFFORTS. WHILE TECHNOLOGICAL TOOLS EMPOWER CYBERCRIMINALS, THEY CAN ALSO BE USED TO OUTSMART THEM.**

Digital security is a collective responsibility. Stay alert, share knowledge and protect yourself and others from falling victim to these deceptive schemes. ■

# देश में बना पहला संविधान संग्रहालय

देश का पहला संविधान संग्रहालय हरियाणा स्थित सोनीपत में बनाया गया है। ओपी जिंदल ग्लोबल विश्व विद्यालय में बने संग्रहालय में 75 वर्षों की संवैधानिक यात्रा को प्रदर्शित किया गया है। गत 23 नवंबर को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने संग्रहालय का उद्घाटन किया। यह संविधान संग्रहालय राष्ट्र को समर्पित है, ताकि भारत के युवाओं को संविधान को ज्ञान के प्रकाश स्तंभ के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके, जो हमारे देश के भविष्य को दिशा देता है। संग्रहालय में संविधान निर्मात्री सभा के सभी 300 सदस्यों की मूर्तियां लगाई गईं हैं। संग्रहालय को कृत्रिम विधा (एआई) तकनीक से बनाया गया है, जो संविधान के महत्वपूर्ण तत्वों एवं प्रमुख प्रावधानों की गहन और रोचक खोज को प्रदर्शित करता है। संग्रहालय का उद्देश्य संविधान को सुलभ और प्रासंगिक बनाना है। यहां आगंतुक 360 डिग्री के दृश्य अनुभव के माध्यम से स्वतंत्रता से पहले भारत की झलकियों और ध्वनियों में डूब सकते हैं। संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक और मल्टीमीडिया के माध्यम से लगी प्रदर्शनी संविधान के निर्माण की तरफ ले जाने वाली घटनाओं की कालक्रमिक गाथा प्रस्तुत करती है। यहां एक अनोखे टूर गाइड रोबोट के माध्यम से भारत को गणराज्य बनाने वाले ऐतिहासिक दस्तावेज को जीवंत किया गया है। संग्रहालय के केंद्र में भारतीय संविधान की 1000 फोटो लिथोग्राफिक प्रतियों में प्रदर्शित की गई है। पांच वर्ष में निर्मित मूल संस्करण में संविधान निर्माताओं के हस्ताक्षर हैं। इस संस्करण की सुलेख कला प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने की थी। पाठ का चित्रण नंदलाल बोस और अन्य कलाकारों ने किया था। यह पांडुलिपि देहरादून में प्रकाशित हुई थी और सर्वे ऑफ इंडिया की तरफ से फोटो लिथोग्राफ की गई थी।

संग्रहालय में भारत के संविधान के निर्माण में वैश्विक प्रेरणाओं और ऐतिहासिक ढांचों का भी अन्वेषण किया गया है। संग्रहालय विशेष रूप से संविधान सभा की महिला सदस्यों के योगदान को भी सामने रखता है। यहां प्रत्येक महिला सदस्य के जीवन और उनके

योगदान को एनिमेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। संग्रहालय में डा. बी.आर. आंबेडकर का होलोग्राम प्रदर्शन भी है। यह स्थापना उनके शब्दों और दृष्टिकोण को जीवंत बनाती है, जिससे आगंतुक उनकी विरासत का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। इस होलोग्राम में उनके भाषणों और लेखों पर आधारित उत्तर प्रस्तुत किए गए हैं। संग्राहलय में राजेश पी. सुब्रमण्यम की मूर्ति 'वी द पीपल ऑफ इंडिया' 'विविधता में एकता' के संवैधानिक सिद्धांत को साकार करती है। राहुल गौतम की म्यूरल 'इकोज ऑफ लिबर्टी' संवैधानिक पांडु लिपियों के तत्वों को आधुनिक डिजाइन के साथ मिलाकर तैयार की गई है। हर्षा दुर्गड्डा की 'त्रिआड ऑफ यूनिटी' में एकता, न्याय और संप्रभुता के विषयों को जोड़ा गया है। निशांत एस. कुम्भाटिल की 'इंसाफ की देवी' भारतीय कानून में निष्पक्षता का प्रतीक, न्याय की देवी को दर्शाती है। प्रदीप बी. जोगदंड की 'कानून के समक्ष समानता' समानता और न्याय का प्रतीक है। देवल वर्मा की बड़ी 'चुनौतियों का नक्शा', दर्शकों को मूल्य और सुंदरता की अवधारणाओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है। के. आर. नरीमन की 'फ्रीडम', 'वी, द पीपल' के संवैधानिक मूल्यों को प्रदर्शित करती हैं। ■

*(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)*

# 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियां

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 DECEMBER, 2024
DATE OF PUBLISHING: 8 DECEMBER, 2024

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26